भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 17 | उदयपुर शुक्रवार 15 सितंबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कुक्की द्वारा गरड़दा की गुफा में कृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, साम्ब व अनिरूद्ध के शैलचित्रों की अनूठी खोज

-डॉ. कहानी भानावत-

बून्दी के विश्व विख्यात शैलचित्र खोजी ओमप्रकाश 'कुक्की' को भारत की सबसे लम्बी शैलचित्र श्रृंखला गरड़दा साइट की उत्तरमुखी गुफा में वासुदेव कृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरूद्ध के दुर्लभ चित्र मिले हैं। ये अब तक ज्ञात वासुदेव कृष्ण, बलराम के शैलचित्रों में सबसे प्राचीन माने गये हैं।

इसकी पुष्टि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम के अधीक्षण पुरातत्वविद डॉ. विनयकुमार गुप्ता ने की है। ये शैलचित्र तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (मौर्यकालीन) के हैं। भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया की पहाड़ियों से लेकर बून्दी जिले के बांकी गांव तक सारा क्षेत्र शैलचित्रों से भरा हुआ है। ये भारत की सबसे लम्बी 35 से 40 किलोमीटर एरिया में फैली शैलचित्रों की श्रृंखला है।

कुक्की ने बताया कि कृष्ण, बलराम के शैल चित्र शिवपुरी की टिकला गुफा में भी मिल चुके हैं लेकिन ये चित्र कृष्णकाल के दूसरी से तीसरी शताब्दी के मध्य के हैं। इसी तरह पाकिस्तान सिंध प्रान्त की गुफाओं में दो साइटें मिली हैं जिनमें कृष्ण, बलराम के चित्र हैं, जो पहली और दूसरी शताब्दी के मध्य के हैं। यहां खरोष्टि लिपि में दोनों के नाम भी लिखे हुए हैं। वहीं बून्दी के गरड़दा में कृष्ण, बलराम के साथ कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न, साम्ब व पोते अनिरूद्ध के चित्र हैं जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (मौर्यकालीन) के हैं। अब तक ज्ञात कृष्ण, बलराम के शैल चित्रों में ये सबसे पुराने हैं।

कुक्की बनाम कुक्का

श्री ओमप्रकाश का चलता नाम कुक्की रखा गया जो अब तो उनकी महत्त्वपूर्ण पहचान ही बना हुआ है। हुआ यूं कि एक संतान के दस वर्ष बाद इनका जन्म हुआ। इनसे पूर्व तीन संतानें हुईं जो अधिक समय तक जीवित नहीं रहीं। ऐसी स्थिति में टोटका किया गया कि यदि लड़का हुआ तो उसे लड़की बनाकर रखा जायेगा।

भागजोग से लड़का हुआ तब किसी को इसकी भनक नहीं लगे, इस हेतु उसके नाक, कान छिदवाये गये। नाक में नथ और कान में कड़ियां पहनाई गईं। पांवों में छोटी-छोटी घुघरियों वाली पायल तथा पूर्णरूपेण लड़की बनाकर रखा गया। पैदा होने पर कोई थाली नहीं बजी और न मिठाई बांटी गई बल्कि नमक बांटा गया और किसी सदस्य के चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं झलकी।

कुक्की ने बताया कि नामकरण संस्कार भी पंडित द्वारा नहीं करवा कर कुक्का की बजाय कुक्की रखा गया। टोटके से कुक्की का जलवा ऐसा बढ़ा कि वे एक साधारण परिवार के अति साधारण दुकानदार होते हुए भी शैलचित्रों के जमीनी खोजक के रूप में पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाये हुए हैं।

देवताओं के विमान हैं वेवाण

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

देवालयों के लिए बनाये जाने वाले वेवाण अपनी कला, तक्षण और लोक चित्रांकन के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। जहां भी नया देवालय बना, वहां के लिए वेवाण बनवाया गया और यह वेवाण बस्सी में ही बना है। यहां के हस्तशिल्पियों के अनुसार कई मन्दिरों के वेवाणों का जीर्णोद्धार भी किया गया और कई जगह नए भी बनाए गये। एक वेवाण करीब एक शताब्दी तक ठीक हालत में रहता है।

चित्तौड़ के पास बस्सी में वेवाण या रामरेवाड़ी का निर्माण विगत पांच सौ सालों से होता आया है। इस क्षेत्र के वैष्णव मन्दिरों के लिए यहां के शिल्पियों ने वेवाण, रथ, पालकी, डोल, झूले आदि तैयार करने शुरू किये थे। इनका उपयोग देवालयों के उत्सवों, आयोजनों में किया जाता रहा। जिनालयों के लिए भी रथ, पालकियों का निर्माण का कार्य आज भी अनवरत है।

जलझूलनी एकादशी से पूर्व यह कार्य जोरों पर चलता है। नवीन मन्दिरों के लिए ही नहीं, पुराने उन मन्दिरों के लिए भी वेवाण बनाने के आदेश मिलते हैं जहां वेवाण क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। इस मौके पर मुख्यतया लक्ष्मीनारायण, चारभुजानाथ, रघुनाथजी, राधा-कृष्ण, नृसिंहद्वारा आदि देवालयों के लिए भी वेवाण बनाये जाते हैं।

ये वेवाण परम्परानुसार आम, अडूसा और सेमल की लकड़ी के बनते रहे। अब सागवान की लकड़ी का उपयोग भी किया जाता है। यद्यपि अब लकड़ी के संकट के कारण जोड़-तोड़ हो सकता है परन्तु देव कार्य के निमित्त लकड़ी मिल ही जाती है।

वेवाण चार, छह, आठ और दस स्तम्भों वाले बनते हैं। इनमें नीचे पागा (आधारक) स्तम्भ के अनुपात में और शीर्ष पर शिखर अथवा गुमटा आवश्यकता व रूचि के अनुसार लगाया जाता है। ये वेवाण परियों, छोगों और अन्य देव प्रतिमाओं से अलंकृत किये जाते हैं।

इनमें आगे गरूड़ अथवा हनुमानजी तथा शिखर के पास गणेशजी की प्रतिमा उकेरी जाती है। वेवाण अपनी रचना में लघु मन्दिर का ही स्वरूप है। मन्दिर की तरह ही इसमें प्रतिमा प्रतष्ठा स्थल का निर्माण 'बैठका' नाम से किया जाता है।

इसमें चीपों (काष्ठ पट्टियों), थाम्बलियों (स्तम्भों), पायादि का संयोजन युक्तिपूर्वक किया जाता है। काष्ठ की ही कीलों का प्रयोग किया जाता रहा है परन्तु अब लोहे की कीलें भी उपयोग में ली जाती हैं। वेवाण के शिखर पर काष्ठ का कलश, बैठकों के पीठे पिछवाई, ऊपर छाजा आदि स्थापित किया जाता है। छाजे का निर्माण सपाट पट्टिका अथवा कई बार बांस की खपच्चियों, पणछों से भी किया जाता है।

बस्सी में परम्परानुसार करीब पांच तरह के वेवाण बनते हैं। इनमें बारह गुणा बारह इंच, डेढ़ गुणा डेढ़, ढाई गुणा ढाई और तीन गुणा तीन फीट के आकार वाले वेवाण अधिक बनवाए जाते हैं। इन वेवाण के लिए उपयुक्त आकार वाले वागे, पोशाकें भी तैयार की जाती हैं। ये पोशाकें रंग-बिरंगी चमकीली होती हैं। कई बार रेशम, साटन, पारछा आदि भी तैयार करवाई जाती है।

वेवाणों की सजावट के लिए उन पर चित्रांकन कार्य किया जाता है। बस्सी के सारे हस्तशिल्पी कुशल चितेरे भी हैं। लोकचित्र शैली में उनकी कूंची सधी हुई है जो वेवाण की बाहरी और भीतरी पट्टियों, पिछवाई पर चित्र बनाते हैं। इन चित्रों में रामायण, भागवत, राजा मोरध्वज, गोपीचन्द भरथरी, नृसिंह लीला, प्रहलाद प्रसंगों के साथ ही श्रीनाथजी व अन्यान्य देवलीलाओं का चित्रांकन किया जाता है। मेवाड़ के विभिन्न देवालयों में मौजूद वेवाणों में ये चित्र मुंहबोले मिलते हैं।

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास
352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय
फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड,
राम-लक्ष्मण वाटिका के पास,
मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

पोथीखाना

तुम पूजित मैं अर्पित

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित विदुषी लेखिका श्रीमती दीपा पन्त 'शीतल' की पुस्तक 'तुम पूजित मैं अर्पित' शुद्ध भावनाओं से रचा गया काव्य संग्रह है। किसी पुस्तक की समीक्षा सम्यक शिक्षा या इक्षणम- सब में ज्ञान प्राप्त करना तथा प्रत्येक तत्व की विवेचना करना है ।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।

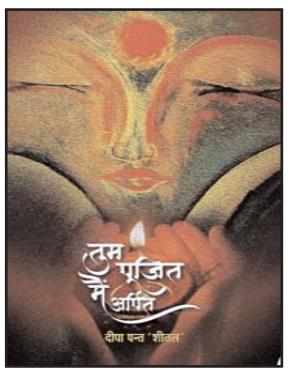

रघुवंशम के प्रथम सर्ग से उद्धृत उपरोक्त श्लोक में दीपाजी अपनी अनुभूति भावों का उचित अर्चन प्रारंभ करते हुए कहती हैं -शब्द और अर्थ के समान सर्वदा साथ लिए हुए जगत के माता-पिता पार्वती और शिव को प्रणाम वंदन करती हूं। पुस्तक में सौ कविताएं समाहित हैं। समस्त कविताओं में दीपाजी ने मानव की त्वरित भावनाओं को बड़ी ही सहजता व सरलता से उकेरा है। अपने बचपन से लेकर अब तक के सफर पर पैनी नजर रखते हुए पारिवारिक सामाजिक संगतियों व विसंगतियों पर कहीं प्रेम तो कहीं उदारता,कहीं उपमा तो कहीं शिकायत के साथ व्यंग के भाव को भी शब्दों में पिरोया है। यथा शीतल होना शीतल दिखना अलग-अलग दो बातें हैं।

'एक उम्र तय करनी होगी मेरे जैसा हो जाने को'

प्रथम कविता दिव्या भाव से अंतिम कविता ध्वज तिरंगा फहराए तक लेखिका आध्यात्म से देशभक्ति तक विभिन्न रसों को स्पर्ष करती हुई नई काव्यात्मक अनुभूति करवाती हैं। प्रकृति के सुखद पहलुओं को उजागर करती कविताएं प्रकृति की व्यथा, हमारी झीलें, धवल हिमालय, चांद और जमीन, मैं वही सड़क हूं, पाहुन आया बसंत प्रमुख है। 'तुम पूजित मैं अर्पित' कविता में प्रेम एक समर्पण की परिभाषा है। यथा -तुम कथन में निरुत्तर तुम प्रश्न में प्रत्युत्तर, तुम मुझ में विलीन मैं तुममें ओतप्रोत हूं।

अध्यात्म और जीवन दर्शन से जुड़ी कविताएं होली के रंगों सा, मैं दीप हूं, हद, ख्वाहिश, दिल चाहता है, ईश्वर का एहसास, इतना अधूरा कर दे मुझे में ईश्वर की भक्ति और श्रद्धा के साथ मानसिक स्थिरता अस्तित्व के बीच का संघर्ष परिभासित होता है। डॉक्टर एक देवदूत, रामा, महाराणा प्रताप, रक्षण, कविताएं प्रभावी बन पड़ी है।

अनेक भाव अतुलित संवेदनाएं मानव मन में प्रफुल्लता के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता चेतनता भर देती है। आत्मिक भाव से भरने वाली कविताओं का यह शब्द गुच्छ सन्देशपरक और श्लाघनीय है। लेखिका ने संगीत की शिक्षा ली है और स्वयं मधुर कंठ की स्वामिनी है अत: काव्यात्मक रचनाओं में सांगितिक प्रवाह है। गेयता है। पूर्ण छंद और रचना विधान की न्यूनता के बावजूद लेखिका में अनेक संभावनाओं की झलक परिदृश्य हो रही है। बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित यह पुस्तक 200 रूपये की है। **-प्रमिला शरद व्यास**

जहाज मन्दिर के तीन प्रकाशन

खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी के संयम जीवन के पचास वर्ष पूर्ण होने पर उपाध्याय मनितप्रभ सागर लिखित 'मणि स्वर्णांजलि' उनके होनहार आदर्श जीवन का सुन्दरतम उपहार है।

लगभग 175 पृष्ठों की इस कृति में आचार्यश्री के जीवन प्रसंग को विविध भावों, रंगों तथा रूपों में बड़े ही रोचक ढंग से वर्णित करने के साथ ही उनके विविध महत्त्वपूर्ण यादगार चित्रों के साथ आचार्यश्री द्वारा बचपन में लिखी काव्य-

रचनाओं, स्तवन तथा आलेख एवं कुछ नई रचनाएं भी सम्मिलित की गई हैं। सर्व साधारण को यह पुस्तक सहज उपलब्ध हो सके इस दृष्टि से लागत मूल्य 75 होने पर भी विक्रय मूल्य मात्र 50 रूपये रखा है।

जीवन को खुशहाल बनाने के लिए छोटे-छोटे विचार-कणों को 17-18 वर्ष पहले संकलित कर 'अहा! जिन्दगी' पुस्तक पाठकों को एक अमूल्य भेंट है। इसमें मुख्यत: आचार्यश्री भद्रगुप्त सूरिजी तथा मुनि तरूणसागरजी लिखित पुस्तकों से सम्पादित अंश हैं। लगभग सौ पृष्ठीय यह पुस्तक लागत मूल्य से सात रूपये कम 50 रूपये में सुलभ है।

आधि व्याधि और उपाधि से मुक्ति के लिए समाधि की औषधि देने वाली सम्बोधि 'जब प्राण तन से निकले' उपाध्याय मनितप्रभ सागर की लगभग 60 पृष्ठीय यह पुस्तक मृत्यु को महा महोत्सव बनाने का ऐसा नुस्खा है जिससे सार्थक जीवन की परिणति सुखमय बने। प्रत्येक समय पढ़ने तथा प्रतिदिन मनन कर जीवन के आत्म तत्व को जागृत करने के लिए यह कृति पथ प्रदर्शिका है। मात्र 30 रूपये मूल्य की यह कृति भी आचार्यश्री जिनक्रान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला, जिला जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

देवताओं की भूमि में 'कला समय' के हस्ताक्षर
एक साहित्यिक पत्रिका की चारधाम यात्रा

भोपाल से प्रकाशित द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'कला समय' के प्रबुद्ध सम्पादक भंवरलाल श्रीवास ने अपनी धर्मपत्नी के साथ पत्रिका को

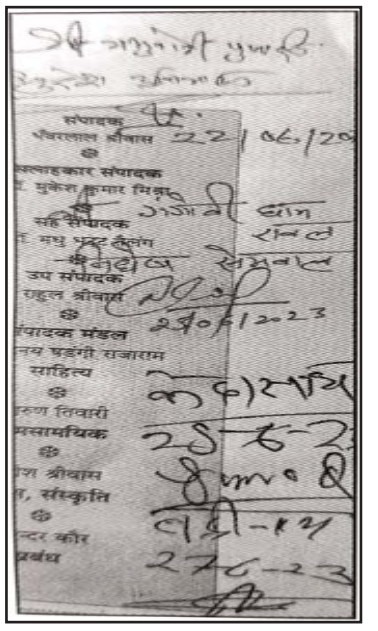

चारों धाम की यात्रा कर का पुण्यार्जन प्राप्त किया। पत्रिका के जून-जुलाई 2023 के अंक में श्रीवासजी का यह कथन द्रष्टव्य है-

'चारों धाम में सबसे पहले हम माँ यमनोत्री के उद्गम स्थल तक पहुँचे। माँ यमुना के भव्य मंदिर में 'कला समय' पत्रिका का आचार्य शकंर प्रकटोत्सव 'एकात्मपर्व' विशेषांक मंदिर के मुख्य पुजारी को 22 जुलाई 2023 को माँ यमुना के श्रीचरणों में समर्पित किया। उसके बाद दिनांक 23 जुलाई 2023 को माँ गंगोत्री के विशाल मंदिर में मुख्य पुजारी द्वारा माँ गंगा को कला समय समर्पित की। दिनांक 25 जुलाई 2023 को बाबा केदारनाथ के मंदिर में मुख्य पुजारी द्वारा केदारनाथजी के श्रीचरणों में अर्पण हेतु पत्रिका कला समय दी। इसके बाद मंदिर के ठीक पीछे आदि शंकराचार्य की समाधिस्थल पर शंकराचार्यजी के श्रीचरणों में उन पर केन्द्रित विशेषांक समर्पित किया और अंतिम धाम बद्रीनाथ में दिनाँक 27 जुलाई 2023 को बद्रीनाथ मंदिर में मुख्य पुजारी द्वारा बद्रीनाथ के श्रीचरणों में कला समय समर्पित की। इस तरह चारों धामों क स्पर्श और आशीर्वाद कला समय को मिला। इस पत्रिका के कारण मुझे और मेरी धर्मपत्नी को भी चारों धाम के दर्शन हुए। इसके पूर्व अयोध्या भी कला समय रामलला के श्रीचरणों का स्पर्श पा चुकी है। मैं कला समय को सशरीर ही मानकर इसके साथ प्रयागराज संगम तक का इस पत्रिका

शब्द रंजन के साथ श्रीवासजी एवं डॉ. भानावत

को स्पर्श मिला। यह अपने आप में गौरवान्वित करने वाला प्रसंग है। यह मेरा नहीं पत्रिका कला समय का सौभाग्य है।'

सम्पादकीय के अन्त में उन्होंने लिखा, 'चारों धाम में सेवारत मुख्य पुजारियों को कला समय देना प्रभु के श्रीचरणों में स्थान पाना, स्पर्श मिलना है। शायद यह पहला अवसर ही होगा जब कोई पत्रिका चारों धाम में अपने जीवन की 26 वर्षों की इस यात्रा में शुभाशीष लेकर लौटी। सच कहें तो चारों धाम आदि गुरु शंकराचार्यजी का ही पुण्य प्रसाद है।'

हिन्दी यत्र तत्र सर्वत्र विविधता में एकता की भाषा है

- वेद व्यास -

हिन्दी दिवस पर हिन्दी भाषी राज्यों में परम्परा के अनुसार सरकारी खर्च पर सरकारी संस्थानों में खूब तालियां और थालियां बजीं और बधाइयां भी बंटी। मुझे इस बात की खुशी भी है कि साल में एक दिन हिन्दी भाषा के प्रकाश स्तंभ रचनाकारों के चित्र प्रकाशित होते हैं लेकिन हिन्दी भाषी क्षेत्रों का ये पुराना दर्द भी छलकता है कि हिन्दी भाषा को आजादी के 76 साल बाद भी हम हिन्दी को एक राष्ट्रभाषा का सम्मान क्यों नहीं दे पा रहे हैं? आप जानते ही हैं कि 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने केवल राजभाषा का दर्जा दे रखा है और तब से हिन्दी भाषा, भारत की राष्ट्र भाषा नहीं मानी जा रही है।

इस दर्द को समझने के लिए मैं खुद हिन्दी भाषा का लेखक होने के नाते ये कहना चाहता हूं कि पहले हिन्दी प्रदेशों में, अहिन्दी प्रदेशों की भारतीय भाषाओं के प्रति आदर और अनुराग की भावना भी दिखाई-सुनाई पड़नी चाहिए।

भारत का भाषा परिवार हम से ये उम्मीद करता है कि कोई एक भाषा किसी दूसरी भाषा पर थोपी नहीं जानी चाहिए। क्योंकि हिन्दी भाषा की संरचना, प्रान्तीय भाषाओं और बोलियों से ही सृजित और समृद्ध हुई है। राजभाषा और राष्ट्रभाषा का ये वाद-विवाद और संवाद ही आज भाषाई वर्चस्व की राजनीति का रूप ले चुका है।

दूसरे रूप में हिन्दी-हिंदू-हिन्दुस्तान की राजनीति ने भी इस हिन्दी भाषा को राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक अस्मिता से जोड़ दिया है और ये माना जाने लगा है कि जब हिन्दी प्रदेशों (उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हिमाचल, हरियाणा) से ही केन्द्र सरकार का भविष्य तय होता है तो फिर भाषाओं का भविष्य भी बहुमत के शासन द्वारा ही तय किया जाएगा।

भारत के अधिकतर प्रधानमंत्री इन हिन्दी प्रदेशों की देन हैं और हिन्दी भाषा की सृजन परम्परा इन्हीं हिन्दी प्रदेशों से आती है। यानी कि हिन्दी भाषा को शुरू से ही एक वर्चस्व की भाषा बनाया गया है जबकि संस्कृत, तमिल, तेलगू जैसी अनेक भाषाएं शास्त्रीय भाषा की तरह बहुत समृद्ध हैं। इस भाषाई सत्ता व्यवस्था की राजनीति ने बंगला, असमिया, मलयालम, कन्नड़ और गुजराती, राजस्थानी, बुंदेलखण्डी, भोजपुरी जैसी अनेक समृद्ध भाषाओं को वर्चस्व की हिन्दी मानसिकता ने हाशिए से बाहर धकेल दिया है।

मेरा इस पृष्ठभूमि में विनम्र सुझाव है कि हिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी को अधिक विवाद रहित बनाने के लिए पहले अहिन्दी भाषा-भाषियों के साथ सृजन संवाद और सांस्कृतिक सौहार्द बढ़ाएं और अनुवाद के पुल अधिक बढ़ाएं। उर्दू, अंग्रेजी के साथ हिन्दी का तालमेल लगातार अनुवाद से ही बढ़ रहा है। मेरा ये भी अनुरोध है कि हिन्दी जगत को इस बात का गर्व होना चाहिए कि आज हिन्दी यत्र-तत्र-सर्वत्र है और बाजार और सरकार के साथ टेक्नोलॉजी और शिक्षा के माध्यम के रूप में भी प्रायः सर्वमान्य है। प्रचार के सभी माध्यम, फिल्म उद्योग, प्रसारण तंत्र- हिन्दी को घर-घर ले जा रहे हैं। ऐसा है कि हिन्दी तो खुद एक बहता हुआ पानी है जो खुद अपना रास्ता बना रहा है। आज लाल किला भी हिन्दी भाषणों से ही जनता के दिल और दिमाग पर राज कर रहा है और अंग्रेजी से अधिक विश्व मंचों पर कामयाब है।

ऐसे में हिन्दी आज बाजार, व्यवहार और बहुमत की राजनीति का सफलतम उदाहरण है। शिक्षा की नई नीति में हिन्दी, अंग्रेजी और तीसरी कोई प्रांतीय भाषा का त्रिभाषा फार्मूला भी यही संवाद और समन्वय बनाता है।

अतः हिन्दी भाषा-भाषियों को उदारता और भाषाई-पारिवारिकता की समझ के साथ, सबका साथ-सबका विश्वास और सबका विकास की गैर बराबरी से मुक्त बात करनी चाहिए। क्योंकि हिन्दी प्रथम है किन्तु सभी की पंक्ति में समान है। केवल हिन्दी का आग्रह और दुराग्रह एक तरह की संकीर्णता है।

अतः हिन्दी को विविधता में एकता का आधार बनाए हैं। हिन्दी के लिए एक दिन का सरकारी कर्मकांड अब बंद होना चाहिए। क्योंकि ये अब जनता के धन का दुरुपयोग है। उचित ये है कि राजभाषा के नाम पर चल रहे सभी अखाड़े अब अहिन्दी भाषी राज्यों में सक्रिय बनाने चाहिए ताकि प्रांतीय भाषाओं से हमारा भाईचारा बढ़े और सांस्कृतिक आदान-प्रदान विकसित हो। दूसरों को सम्मान देकर ही आप उनसे सम्मान ले सकते हैं। क्योंकि उत्तर की संकीर्ण राजनीति भी बढ़ती है। हिन्दी भाषी लोगों को अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ना-लिखना और बोलना भी चाहिए ताकि हिन्दी भारत में भाषाई एकता का चंदन पानी बन सके। इसलिए अपना दर्द बताएं तो दूसरों का दर्द भी समझें।

स्मृतियों के शिखर (171) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जन-जन के कंठ पर आसीन साहित्य ही लोकसाहित्य

सृष्टि का कोई उपादान, कोई तत्व, कोई रूप सरूप आधार आलम्बन अपने अकेले में कोई अस्तित्व नहीं रखता। सर्वत्र समूह की सत्ता स्वीकारी गई है इसीलिए सबका सबके साथ सबके लिए आपसी अन्त: संबंध मुख्य है जो पूर्णता को परिभाषित करता है।

सृष्टि की रचना के पीछे बड़ा अद्‌भुत इतिहास छिपा है। धरती, आकाश, हवा, पानी सबके सब एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। आकाश को वायु ने थाम रखा है तो वायु को धरती थामे हुए है। धरती को शेषनाग अपने पर टिकाये हुए है तो शेषनाग कश्यप पर आसीन है। कश्यप पानी पर थमा हुआ है। यह कश्यप तीन सौ सत्ताईस योजन का है। एक योजन सौ कोस का कहा गया है। पानी में बड़ी जबर्दस्त ताकत होती है। इसी ने सारी सृष्टि संभाल रखी है। हमारे यहां महाप्रलय कभी नहीं हुआ। खण्ड प्रलय तो कई बार हुए। शेषनाग और कश्यप कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए। ये दोनों मृत्युंजय हैं।

इन सबके केन्द्र में शरीरधारी मनुष्य है जो सर्वश्रेष्ठ ज्ञानधारी कहा गया है। उसी ने सृष्टि के सहस्यों, चमत्कारों बनती-बिगड़ती धाराओं और दृश्य-अदृश्य होते कलात्मक रूप तथा कौशलजनित कर्मशीलता से विविध कला-रूपों को जन्म दिया। लोककला भी इनमें से एक है।

रहस्यों के इन घेरों में जो खुली मुट्ठी नहीं हो पाये उन्हें मनुष्य ने पराशक्ति का रूप दिया। यही कारण है कि उसके हर कला कौशल में ईश्वरत्व अथवा देवत्व का वास विद्यमान स्वीकार किया गया है। इससे कला चाहे आदिवासियों की हो या अन्य कौमों की, उसके मूल में उस परमसत्ता के प्रति अटूट विश्वास, अखूट आस्था की उपजीव्यता पूर्णरूपेण लक्षित मिलेगी। उदाहरण के लिए आदिवासी भीलों के गवरी नृत्य को ही लें।

कहने को यह उनका नाच-नृत्य है किंतु इसके मूल में जो कथा-बीज है वह सृष्टि के उद्‌भव को उत्खनित करता है। सृष्टि नियंता शिव-पार्वती के प्रतिनिधि के रूप में भोपा पूरे खेल में उपस्थित रहते अपने शिव स्वरूप बुड़िया तथा पार्वती-शक्ति स्वरूप दो राइयों की उपस्थिति दिये रहता है। दिनभर प्रदर्शित होने वाले इस प्रदर्शन में कई स्वांग, कई ख्याल, कई खेल तथा लीला दृश्य देखने को मिलते हैं। इसमें सामाजिक और जंगलजीवी संपूर्ण आदिवासी जीवनधारा का सांगोपांग दरसाव भी है।

भाद्र में रक्षाबंधन के बाद से शुरू होकर गवरी पूरे चालीस दिन गांव-दर-गांव भीली सदस्यों की भागीदारी के साथ उनके व्रत, अनुष्ठान, संयम, बह्मचर्य, खुशहाली, सुकाल की व्याप्ति के मनौतीपूर्ण संस्कारों की सांगोपांग परिदर्शना देता है। थाली और मादल की गूंज देता यह नृत्योत्सव प्रत्येक राहगीर को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें खुशहाल जीवन जीने की सुगंध का छींटा देकर जनकल्याण का कारक बनता है।

बगड़ावत लोक महाभारत में एक किस्सा आता है कि सर्वश्रेष्ठ फूल कौनसा है। यों तो नामधारी फूलों में से ही श्रेष्ठ का चयन करना होगा किंतु वहां फूल वही नहीं है जो फूल नामधारी है। श्रेष्ठ फूल वह है जो उपयोगी है जिसके बिना जीवन का तारतम्य नहीं जुड़ पाता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है गाय जिस पर सारी अर्थ व्यवस्था टिकी हुई है। उसके बछड़ों के बल पर ही पूरी कृषि निर्भर है।

सर्वश्रेष्ठ फूल है घोड़ी जिसकी शक्ति पर राज्य टिके हुए हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है सूरज जिसके निकलते ही नर-नारी काम पर लग जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है कपास जिसके कपड़े से संसार अपना तन ढकता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है वर्षा जिसके अभाव में सारे फूल कुफूल हो जाते हैं। युगयुगीन सन्दर्भ में देखें तो समय बड़ा बलवान होता है। आज की स्थिति में यदि आदिवासी क्षेत्र में पूछना करें तो वहां महुए का फूल सर्वश्रेष्ठ है जिसका अंग-प्रत्यंग ही नहीं, छांह और छाया तक जीविकोपार्जन के लिए जरूरी है। सर्वश्रेष्ठ फूल है शिक्षा जिसके बिना विकास की बात नितान्त बेमानी लगती है।

लोक अर्थात् जन-जन के कंठ पर आसीन साहित्य ही लोकसाहित्य है। इस कंठासीन साहित्य से तात्पर्य मौखिक अथवा वाचिक साहित्य से है। यह साहित्य परम्पराशील होता है और उन लोगों में व्याप्त होता है जो दिखावे से दूर सहज प्रवृत्तियों में संस्कारित होते हुए परिपाटीगत आस्था एवं विश्वासों की डोर में बंधे सामूहिक जीवन के सहयात्री होते हैं। वे समष्टिगत धर्म-कर्म तथा अध्यात्म-अनुष्ठान के जीवनचक्र से बंधी लोकमानसीय प्रज्ञा-मनीषा के महत्वपूर्ण हिस्से होते हैं। उनका व्यक्ति गौण होता है। वे समग्रत: लोक के वशीभूत होते हैं। यही कारण है कि उनमें प्रचलित गीत, नाट्य, कथा, वार्ता, प्रहसन, नृत्य, शिल्प, चितरावण सब लोक की लोकरंजित लोकमान्य रचना होती है। उसका रचनाकार समूह-व्यक्ति होते हुए भी वह गौण होता है। गौण होता रहता है। गौण होता हुआ लगता है और कभी-कभी मिथक बन रह जाता है।

ऐसा भी होता है जब कोई रचनाकार अपने को अज्ञात एवं अनाम रखकर जो कुछ रचना वह करता है उसे लोक में पराये हाथों कर देता है। अपनी रचना को अपने नाम से चलायमान करने से लोक में उसकी पकड़ अत्यंत ढीली पड़ जाती है जबकि वही रचना बिना किसी रचनाकार की छाप के यदि लोक में प्रवाहित कर दी जाय तो उसका असर निश्चय ही दूसरे ढंग का होगा। लोक में ऐसे कई रचनाकार मिलेंगे जिन्होंने अपनी रचनाओं को बेहिचक अनाम रखा और उसे लोक की धरोहर होने दिया।

किसी का रचा हुआ साहित्य लोक में जाकर रूपान्तरित हो जाता है। कहीं शब्द बदल जाता है तो कहीं पूरी पंक्ति ही नई जुड़ जाती है। कई बार एक छंद अनेकों द्वारा, एक ही समय, एक ही जगह रचता रहता है। आदिवासियों में जब गायक-नर्तक जुड़ते हैं तब स्वत: ही गीतों की धाराएं स्फुरित होती रहती हैं। एक पंक्ति किसी ने उच्चरित की तो दूसरी पंक्ति कोई दूसरा उच्चरित करता पाया जाता है।

ऐसे पंक्तियां जुड़ती रहती हैं। गायक रात-रात भर गाते रहते हैं। पहले से कुछ भी लिखा, सुना, समझा नहीं होते हुए भी कैसे कोई कड़ावा, कोई पंक्ति गंगा की तरह खलक पड़ती है। दूसरी ओर मीरां, चन्द्रसखी और अन्य कई ऐसे नाम हैं जिनकी छाप के पद, गीत, भजन कई गायक जातियों और कलाकारों की जबान पर चढ़े हुए हैं। रात्रि जागरण, विशिष्ट बैठकों, गायक मण्डलियों का जहां भी जुड़ाव होता है, वहां कंठासीन साहित्य की धाराएं स्वत: स्फूर्त हो घुमड़ती रहती हैं।

एकबार चित्तौड़ जिले के सावा गांव में एक बारात पहुंची। अर्धरात्रि को फेरे के दौरान दूल्हे के कानों में दूर प्रदर्शित हो रहे तुर्राकलंगी ख्याल की धुन टकराई। दूल्हे को लगा कि ढोलक का ठेका ठीक नहीं लग रहा है। वह तत्काल चंवरी छोड़ उस धुन के सहारे प्रदर्शन स्थल पहुंचा और मंच पर लावणी गान द्वारा ढोलकवाले को इशारे में समझा दिया। ढोलक वाले ने सही स्थिति संभालली और उस ख्याल में नई रंगत डालदी।

लोकनाट्य प्रदर्शन में तो पूरा गांव ही हर तरह की व्यवस्था में लग जाता है। महीने भर पहले से तैयारियां शुरू हो जाती हैं। हरिजन सफाई करता है। भिश्ती पानी का छिडकाव करता है। बनिया पात्रों की पोशाक के लिए कपड़ा देता है। रंगरेज रंगाई का काम करता है। दर्जी पोशाक सीने का काम करता है। धोबी उस्तरी करता है। तेली तेल देता है। नाई मशाल जलाये रखता है फिर मंच को सजाने में कई लोग जुटते हैं। अच्छे से अच्छे कलाकार वादक जुड़ते हैं। दर्शक सारे खेल और उसकी भावभंगिमा से परिचित रहते हैं। पात्रों की प्रस्तुति में जरा भी ढिलाई दर्शकों को स्वीकार्य नहीं होती। नाटक लिखने वाला तो केवल शब्द देता है। उसका नाटक तो किताबों में बंद रहता है। उसकी प्रस्तुति में लोक की यदि इतनी भागीदारी नहीं हो तो वह नाट्य नहीं बन सकता।

गांव की चौपाल या फिर देवरा-मंदिर भी मुख्य प्रदर्शन स्थल होता है। कई बार देवता की स्वीकृति से नाट्य प्रदर्शन, जुलूस या फिर अन्य धर्म-अध्यात्म से जुड़े लोकानुरंजन होते हैं। देवता के प्रतिनिधि के रूप में भोपा ही गांववालों के हर कार्य-व्यापार का नियंता होता है। देवता भोपे के शरीर में आकर दरसन देता है और हर बीमारी, हर समस्या का निराकरण करता है। सामूहिक रूप से भी लोग मिलकर देवता के फरमान का अक्षरश: पालन करते हैं। गांव में कभी पशुओं को बीमारी लग गई या वहां के निवासी किसी बीमारी या अनिष्ट से घिर गये तब देवता ही उनकी रक्षा करता है। ऐसा भी हुआ है जब भोपे द्वारा आदेश पाकर ग्रामीणजनों ने पूरा का पूरा गांव ही छोड़ दिया। लोक की ऐसी आस्था, देवता के प्रति ऐसा समर्पण और विश्वास अच्छे पढ़े-लिखों में भी देखने को मिलता है।

लोक की यह आस्था ऐसे ही नहीं जुड़ती, पनपती और जीवनाचार का निर्वाह करती है। इसके पीछे कोई न कोई देव-आस्था, चमत्कार अथवा फल प्राप्ति का ही वरदान होता है। इस दृष्टि से लोककला के जितने भी रूप हैं, लोकशिल्प के जितने भी सरोकार हैं, लोकचित्रकारी के जितने भी सोपान हैं, उन सबके मूल में समूहबद्ध धर्माराधना के ही सूत्र सुगठित हुए मिलते हैं। मेवाड़ का रासधारी ख्याल कृष्णकथा से सम्बन्धित नहीं होकर रामकथा को चरितार्थ करता है। इसमें जगह-जगह रचनाकार तुलसीदास के नाम की छाप है किन्तु तुलसी रचित एक भी चौपाई उसमें नहीं मिलती और न रामचरित मानस का आधार मिलता है। ऐसी असंख्य रचनाएं मिलेंगी जिन पर मूल लेखक का नाम नहीं होकर चर्चित रचनाकारों के नाम मिलते हैं।

स्थानीय अथवा आंचलिक जीवनधर्मिता, संस्कृति तथा बोली का प्रभाव पड़ने के कारण लोकरंजन की ये कलाएँ आंचलिकता के रंग में रंगकर इतना जबर्दस्त प्रभाव ग्रहण कर लेती हैं कि वे उसी नाम से चल पड़ती हैं। राजस्थान के चिड़ावी, शेखावाटी, नागौरी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, किशनगढ़ी नाम से जो ख्यालों की रंगतें अथवा रंगविधाएँ प्रचलित हैं उनके पीछे यही पक्ष प्रमुखता लिये है।

किसी भी अंचल की भाषा अथवा बोली की जीवनीशक्ति और उसके सांस्कृतिक बोध को जानना और तदनुकूल अध्ययन करना बहुत जरूरी है। इसके बिना किया गया अध्ययन कभी-कभी बड़ा हास्यास्पद और अर्थ का अनर्थ करने वाला होता है।

उदाहरण के लिए आकाशवाणी जयपुर से राजस्थानी में समाचार का प्रसारण करते समय एकबार वाचिका पंजाबी लडकी ने 'पद्‌मश्री से अलंकृत करने' की बजाय 'पद्‌मश्री का गहना पहनाया' बोल दिया। वह अलंकृत को अलंकार यानी गहना समझ गई।

किसी औरत को उसके पति द्वारा पहनाये जानेवाले आभूषण के रूप में तो गहना चर्चित है ही, जेल में कैदी को जो बेड़ी पहनाई जाती है उसके लिए भी गहना शब्द प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे ही राजिया के सोरठे पढ़ाते समय एक कॉलेज प्रवक्ता ने राजिया को कवि बता दिया जबकि कवि द्वारा राजिया को सम्बोधित करते ये सोरठे रचे गये हैं।

यही हाल मेवाड़ के संत चतुरसिंह द्वारा लिखे गये 'अलख पच्चीसी' के दोहों का हुआ जिसके प्रत्येक दोहे में उदिया को सम्बोधित करते हुए अंत में 'उदिया अलख पिछाण' कहा गया है।

वह लोकशक्ति ही है जो किसी भी शब्द को शक्ति देकर ताकतवर बनाती है या फिर उसे शक्ति विहीन भी कर देती है। इस दृष्टि से लोक में स्वीकार किया गया लोकसम्मत अर्थ ही महत्वपूर्ण होता है। इसके सामने शब्दकोश का अर्थ भी कभी-कभी, भौंडा और खोटा लगने लग जाता है। लोक में नये-नये शब्दों का निर्माण निरन्तर होता रहता है। उदाहरण के लिए प्रतिदिन नौकरी पर जाने और पुन: लौट आने वाले को डेली अप डाउन करने वाला कहा जाता है।

राजस्थानी में इसके लिए अपडाउनिया शब्द प्रचलन में है लेकिन जो यहां की जीवनधर्मिता के रंग में रंगा हुआ होगा वही इसका यह अर्थ निकाल पायेगा।

लोक की कोई विधा हो, उसमें निरन्तर प्रयोग होते रहते हैं। एक दृष्टि से तो उसकी जीवनीशक्ति ही प्रयोगमूलकता है किन्तु यह प्रयोग स्वत: स्फूर्त, प्रकृति के अनुकूल होता है, किसी के करने से नहीं, जैसे किसी वृक्ष से बिना तोड़े कोई फूल-फल गिरता है और नये फूल-पत्ते आते हैं। कब कोई कली पकी, कब कोई फूल बना, खिला, खुशबू फैली, कुछ पता नहीं चलता। यही स्थिति लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाओं की है।

समय की नब्ज को देखते हुए लोकसाहित्य-संस्कृति-कला के समुचित विकास के लिए बहुत सारे प्रयत्न अपेक्षित हैं किंतु हमारा ध्यान इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पहचान देने की ओर ही अधिक बढ़ रहा है जो ठीक नहीं है।

लोककला की एक अखिल भारतीय संगोष्ठी में अध्यक्ष पद से अपने संबोधन में प्रख्यात लोकनाट्यवेत्ता जगदीशचन्द्र माथुर ने सुझाव देते हुए एक सशक्त मंच की आवश्यकता बताई और कहा कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की योजनाओं के अन्तर्गत कलादलों को विदेश भेजने की बजाय हमारे ही देश के विविध राज्यों में भेजना चाहिए ताकि हम अपनी कला-सांस्कृतिक विधाओं की जानकारी अपने देश में भली प्रकार दे सकें।

श्री माथुर ने यह भी सुझाव दिया कि लोककलाओं के समारोह जो प्राय: शहरों में आयोजित किये जाते हैं, वे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक आयोजित हों ताकि स्थानीय कलाकारों में आत्मविश्वास बढ़ सके और इन कलाओं का महत्त्व भी वहां के लोगों में प्रकाशित हो सके। लोककलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेतु सरकारी अनुदान के साथ-साथ जन सहयोग से एक जनकोष की स्थापना पर भी उन्होंने बल दिया।

20वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध तो गुलामी का ही अंधेरा लिये रहा। बाद की आधी शताब्दी आजादी का स्वपन-सुख और स्वातंत्र्य चेतना मुखरित करने में व्यतीत हुई। इस बीच राजाओं के राज बदले। जमीजमाई व्यवस्था बदली। परम्पराओं में भी ठहराव और बदलाव का संक्रमण चला। अंचलों ने करवट ली। विकास के नाम पर बहुत सारा पुराना व्यर्थ करार दिया गया। घर बैठे रोशनी-पानी के आलम ने एक नई स्पर्धा तथा प्रतिभा-प्रज्ञा की राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय छलांग और भागमभाग की जीवनधारा दी।

ऐसे हतप्रभ एवं विस्मयकारी वातावरण में टीवी-टेलीफोन-मोबाइल जैसे माध्यमों ने मनुष्य को पूरी दुनिया की चकाचौंध में बांध दिया तब बिचारी परम्पराजीवी लोककलाएँ कहां तथा कैसे अपना बचाव किंवा बनाव किये रहतीं। तब भी जो शेष रह गयीं वे अपनी गहरी जड़ों की गहन-सघन ताकत के बल अपना अस्तित्व दे पाई। जिसे बदलना ही है वह सबको अपने अनुकूल बनाने की हवा देगा। आने वाली शताब्दी में परम्परा के नाम पर पिछला कैसा क्या कुछ बचा भी रहेगा, कहना मुश्किल होगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 सितंबर2023

सम्पादकीय

अपनी पराई भाषा

जरा-सा पढ़-लिखकर होशियार बन जाने की समझ से हम अपने ही घर-पड़ोस में बड़े बनने के चक्कर में अपनी बोली छोड़ने में बहादुरी समझते हैं। छोटे-छोटे गांवों का लड़का जब पास-दूर के स्कूल से शिक्षित होकर आता है तो अपने घर-गांव वाले भी उससे बदलाव की अपेक्षा करते हैं। अधिकतर तो यह बदलाव बोली अथवा भाषा का ही होता है।

अपने घर में ही जब बच्चा बाहर से छुट्टियों में या किसी त्यौहार-उत्सव पर आता है तो अपने नाना-नानी, दादा-दादी से भी वह बदले परिवेश में अपने को प्रस्तुत करता है और वे लोग भी इससे खुश होते हैं कि बच्चा बाहर गया तो अच्छा आदमी बन रहा है।

इस बार रक्षाबंधन पर ही देखा गया कि एक भतीजा जब अपनी बुआ से मिलने गया तो वह अंग्रेजी की तो अच्छी जबान लिए था पर हिन्दी के खासतौर से अंकों की पहचान ही भूल बैठा। बुआ ने कहा कि लाला अब मेरी बत्तीसी भी डागडर ने ठीक से नहीं लगाई सो समस्या जस की तस बनी हुई है। बुआ की बात कुछ-कुछ तो वह समझ गया पर बत्तीसी पर जाकर सोचने लग गया। जब उसे कहा गया कि बत्तीसी यानी थ्रट्री टू दांतों की परत ठीक से काम नहीं कर रही है तो वह अच्छा, अच्छा कह थोड़ा मुस्कराने लगा।

गांवों में लोग अधिकतर कहावत-मुहावरी वाणी का प्रयोग करते हैं। रंग-व्यंग्य की वाणी भी उनकी बड़ी मजेदार ठसक देती होती है फिर छोटे गांव अर्थात् गांवड़े जाओ तो शुद्धतर खेती करने वाले किसानों की बोली ही अलग होती है। वहां तो रोना तक गाली-गीतमय होता है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तो बहुत पहले ही लिख चुके थे-

यह आधुनिक शिक्षा किसी विध प्राप्त भी यदि कर सको।
तो क्या लाभ बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।।
लिखते रहो जो सिर झुका सुन अफसरों की गालियां।
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियां घरवालियां।।

और खड़ीबोली के जन्मदाता बाबू भारतेन्दू हरिश्चन्द्र तो बड़े भविष्यद्रष्टा थे जिन्होंने तब ही भांप लिया था कि अपनी वाणी, अपनी भाषा और अपनी बोली ही हमारी उन्नति का सोपान है। उन्होंने कहा-, 'निज भाषा उन्नति अहो! सब उन्नति को मूल।'

बुआ कब चुप रहने वाली थी। भतीजे की ऊंची पढ़ाई से जहां वह खुश हुई वहां उसे भी खेद रहा कि वह सबकुछ अच्छा पढ़ रहा है पर अपनी जमीन से कटा जा रहा है। यह समय की बलिहारी है। उसने एक श्लोगन दोहराया-

देस गया परदेस गया, भूल्या घर री वाणी।
वाटर-वाटर करतां पिराण ग्या, खाटला हेठे पाणी।।

अर्थात् देश-देशान्तर घूमे, अच्छा किया किन्तु अफसोस कि अपनी रात-दिन बोलने वाली बोली भूल बैठे। अंग्रेजीयत के कारण वाटर-वाटर करते मारे प्यास के प्राण विसर्जित हो गये जबकि खटिये के नीचे ही पानी रखा हुआ था। अपनी बोली भूल बैठने के चक्कर में हम कितना अनर्थ कर बैठे। हम जिन्हें समय के पिछड़े ग्राम्य परिवेशी कहते हैं उनके पास अपनी बोली किंवा भाषा का ऐसा इतना भरपूर खजाना है कि उसके आगे किसी अन्य भाषा की तुलना ओछी लगती है। इसे समझना भी बड़ा मुश्किल है। अपनी भाषा को खोना पूरी संस्कृति, परम्परा और जीवनधर्म से हाथ धोना है।

तिलकायत राकेश महाराज को विद्या विभूषण अलंकरण

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सरकार द्वारा नाथद्वारा मंदिर के तिलकायतश्री एवं श्रीनाथजी मंदिर मंडल बोर्ड के अध्यक्ष गो. ति. श्री 108 राकेशजी (श्रीइंद्रदमनजी) महाराज को शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अतुलनीय योगदान के लिए 'विद्या विभूषण अलंकरण' से सम्मानित किया गया।

बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में आयोजित भामाशाह पुरुस्कार समारोह में राकेश महाराज को विद्या विभूषण अलंकरण से मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डॉ. बी. डी कल्ला ने सम्मानित किया। इस अवसर पर शासन सचिव नवीन जैन, शिक्षा निदेशक डॉ. कानाराम, विशिष्ठ सचिव शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज चित्रा गुप्ता एवं अतिरिक्त सचिव शिक्षा विभाग किशोरकुमार उपस्थित रहे। तिलकायत महाराज की ओर से उनके प्रतिनिधि सुधाकर उपाध्याय अधिकारी श्रीकृष्ण भंडार तथा राजेश्वर त्रिपाठी मुख्य जनसंपर्क अधिकारी ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

तिलकायत महाराज ने सन्देश दिया कि गुसांईजी के द्वारा प्रारम्भ परोपकार एवं जनसेवा के कार्य के लिए तिलकायत परिवार सदैव तत्पर रहेगा। सेवा का यह मनोरथ ठाकुरजी के कृपा से सतत जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि वर्तमान मंदिर मंडल नाथद्वारा के अध्यक्ष के रूप में तिलकायत राकेश महाराज नाथद्वारा क्षेत्र में अनेक स्कूल, महाविद्यालय, धार्मिक संस्थान चिकित्सालय, सांस्कृतिक, साहित्यिक व कलाओं के संरक्षण श्रेष्ठतम कार्यों में सदैव प्रतिबद्ध व सेवारत हैं।

ज्योतिषी का भविष्य कथन

- गणेशलाल कोठारी -

रामू और श्यामू दोनों पक्के दोस्त थे। जीवन के आखिरी पड़ाव तक भी दोनों की घनिष्ट मैत्री रही। एक दिन दोनों ज्योतिषी के पास गये। ज्योतिषीजी अच्छे जानेमाने भविष्यवक्ता थे। पूरे गांव में उनका आदर-सत्कार था। दबदबा था।

ज्योतिषी ने रामू से कहा, 'भैया तुम्हारे भाग्य में बहुत बड़ा खजाना लिखा है। आज से ठीक तीसरे माह अनायास तुम सेठ की पदवी से विभूषित होओगे।' रामू की खुशी की कोई कल्पना नहीं की जा सकती।

दूसरे मित्र श्यामू से ज्योतिषीजी बोले, 'भैया तुम्हारे ग्रह नक्षत्र निकट भविष्य में बहुत ही बोदे आने वाले हैं। जरा सावधानी से रहना। वैसे कहना नहीं चाहूंगा पर तुम्हारे सूली पर झूलने का योग बन रहा है। तुम्हें भी ठीक तीसरे माह ही दुर्घटना का शिकार होना पड़ेगा।'

रामू ने सोचा, आने वाले समय में मैं अपार धनसम्पदा का स्वामी बन जाऊंगा तो क्यों न अभी से जितनी मौज शौक कर सकूं, करूं। यह सोच वह बड़े ठाठबाट से जीवन जीने लगा। ऐशो आराम के जीवन में अब तक कमाई सारी राशि उड़ा दी।

उधर श्यामू ने सोचा, जीवन बड़ा अनमोल मिला है तो जो शेष रह गया है, क्यों न धर्म-कर्म में व्यतीत करूं। यह विचार कर उसने चींटी को दाना, कुत्ते को रोटी तथा गाय को घास खिलाना प्रारम्भ कर दिया। उसे पुण्यार्थ अपना जीवन बसर करने में बड़े सुख तथा संतोष की अनुभूति हुई।

तीसरे माह ज्योतिषीजी के बताये अनुसार रामू को खजाना तो नहीं मिला पर एक पैसा जरूर मिला। वह विचार करने लगा कि यह किसी बड़े खजाने के मिलने का संकेत है। शुरूआत तो शकुनी लगती है।

श्यामू सूली मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था कि अचानक उसके पांव में एक कांटा ऐसा लगा कि जैसे पूरा शरीर ही उसने उठा लिया है।

दोनों मिल ज्योतिषीजी के पास पहुंचे और आपबीती घटना बयां की। ज्योतिषीजी बोले, 'ज्योतिष के हिसाब से तुम्हारी कुण्डली में जो योग था वह मैंने बताया था लेकिन तुम्हारे कर्म आड़े आये और यह घटना घटी।' रामू से कहा, 'तुम बावरे निकले जो खजाना मिलने से पहले ही अति आशावादी बन कमाया धन ही पहले खर्च कर दिया।

यह मूर्खपन ही तो था। देखो श्यामू का मन डिगा नहीं और न खिन्न बना। बड़ी होशियारी से उसने काम लिया और पुण्य-कर्म शुरू कर दिये सो सूली तो टल गई और उसकी बजाय मात्र शूल की पीड़ा ने ही इसे सन्तोषी बना दिया।'

'अकादमी से अपेक्षाएं होना अच्छी बात है पर मैं भी एक सीम में बंधा हूं' : छंगाणी

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष प्रो. शिवराज छंगाणी से 'शब्द रंजन' के लिए डॉ. सतीश मेहता की बातचीत के प्रमुख अंश-

(1) प्रदेश की सभी अकादमियों के अध्यक्षों की तुलना में आप सबसे वरिष्ठतम अध्यक्ष हैं। कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर : सच है। मुझसे भी और स्वयं मुझे भी लग रहा है कि मित्रों के सहयोग से कुछ ऐसा करूं जो सबको अच्छा लगे। मैंने तो 'राज रो तेल खोल्यां में झेल' कहावत को ही चरितार्थ किया है।

प्रो. शिवराज छंगाणी

(2) राजस्थानी भाषा की मान्यता को लेकर पिछले चालीस वर्षों से आन्दोलन चल रहा है। इससे अकादमी के कामकाज पर आप कोई व्यवधान महसूस करते हैं?

उत्तर : राजस्थानी भाषा की मान्यता हेतु समय-समय पर बराबर मांग उठाते रहे हैं। अब समय आ गया है, सभी गहरे भाव से विविध रूपा साहित्य सृजन में समर्पित हो जायें। मान्यता की प्रतीक्षा छोड़ दें।

(3) राजस्थान में विभिन्न अंचलों की विभिन्न बोलियां हैं। इससे क्या भाषा की मान्यता बाधित हो रही है?

उत्तर : राजस्थानी में विभिन्न बोलियां तो हैं परन्तु राजस्थानी भाषा हेतु सभी लोग एकमत नहीं लग रहे हैं। हर भाषा अनेक बोलियों, वाणियों का समुच्चय है। बोलियां रहेंगी तो ही भाषा पुष्ट होगी।

(4) अकादमी की कार्यप्रणाली को लेकर आप किस तरह बदलाव या परिवर्तन चाहते हैं?

उत्तर : अकादमी की कार्यप्रणाली में समयानुकूल बदलाव होता रहता है। जो कामकाज चलता आया है उसका मूल्यांकन हो और परिस्थिति के अनुसार बदलाव हो। अपेक्षाएं तो अनेक हो सकती हैं।

(5) आपके पास क्या कोई ऐसे सुझाव हैं जिनसे आन्दोलन समाप्त हो जाय और भाषा जनित समस्या का निराकरण हो सके?

उत्तर : आन्दोलन में राजनीति की गंध जुड़ गई, ऐसा सभी महसूस करते हैं। इसकी बजाय नीति हो।

(6) साहित्यकारों को सम्मान आदि दिये जाने में आप अन्य प्रांतों की तुलना में क्या कोई परिवर्तन करना चाहेंगे?

उत्तर : राजस्थानी साहित्यकारों का सम्मान करना सर्वोपरि लक्ष्य होना चाहिए। भावना भी है पर भावना के साथ अन्य अकादमियां भी हैं। सबको समानधर्मी नजरिये से देखना होगा। यों यह सोच सरकार का है।

(7) पिछले दो-तीन दशकों में प्रांत में कई अकादमियां अस्तित्व में आई हैं। क्या इससे राजस्थानी अकादमी पर कोई असर पड़ा है?

उत्तर : नई अकादमियां अस्तित्व में आयी हैं तो साहित्य समाज के लिए यह कदम वस्तुत: प्रोत्साहित करने की दिशा में नया कदम है। राजस्थानी अकादमी परम्परागत रूप से संचालित होती रही है और आगे भी गतिमान रहेगी।

(8) अकादमी के स्तर को देखते हुए जागती जोत पत्रिका के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर : साहित्य अकादमी ने 'मधुमती' का स्वरूप बदला है। 'जागती जोत' के लिए भी सदस्यों से परामर्श कर समयोचित कदम अवश्य उठायेंगे।

(9) अकादमी बाबत भविष्य को लेकर आपके पास क्या कार्य योजना है?

उत्तर : अकादमी में म्युजियम बने तथा राजस्थानी वाद्य-यन्त्रों को एकत्र करके उनमें रखने के विचार महनीय है। सम्भव हो तो इसमें सभी सदस्यगण प्रयासरत रहें, ऐसी मंशा है। हर कार्य सम्पादन आर्थिक सहयोग के बिना सम्भव नहीं। योजना मात्र नहीं हो।

(10) राजस्थानी अकादमी के पास तीन बड़े दायित्व हैं जो अन्य किसी अकादमी में नहीं हैं। ये हैं भाषा साहित्य और संस्कृति सम्बन्धी कार्य। क्या अकादमी के जीवनकाल में तीनों के साथ समान कार्यक्रम समायोजित हुए हैं?

उत्तर : भाषा, साहित्य एवं संरक्षण सम्बन्धी दायित्व को निभाने के लिए समय-समय पर प्रयत्न किये जा रहे हैं। अन्य अकादमियों में साहित्य पर अधिक जोर है। इसमें सरकार की भी संस्कृति के लिए अधिक कुछ करने की मंशा निहित है। सो मैं इस पर अधिक कुछ करने का प्रयत्न करूंगा।

आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं कि वे हमें जागरूक, क्रियाशील बनाये रखने में का न केवल प्रेरित किया यथा सहयोग का भी आश्वासन दिया।

अजब-गजब

शादी कराने वाला पेड़

भारत देश अजूबों में भी अजूबा महा अजूबा है। यहां जितने टोटक-टोटके और मन्नत-मनौती के अजूबे मिलते हैं वे कल्पनातीत हैं।

मुंगेर जिले के जमालपुर की काली पहाड़ी पर मां काली के मन्दिर की बगल में एक वट वृक्ष है। वट वृक्ष यों भी अपने वट में सब पेड़ों से अलग पहचान लिये है। एक तो यह सातवें पाताल से धरती पर कई मनौतियों, शर्तों और मनुहारें करके लाया गया। फिर इसकी उम्र ही सैकड़ों वर्ष की है और इसकी जड़ें धरती पर लटकतीं पुनः धरती में समाविष्ट होतीं फिर आगे-से-आगे चलायमान हो वृक्ष के रूप में फलती हुई कोई बारह कोस तक बढ़ती रहती हैं।

इस वृक्ष के बीज भी बहुत छोटे-छोटे नन्हे कणों जैसे होते हैं। हजारों बीज नष्ट होते हैं तब कहीं जाकर एक बड़ला अर्थात् वट फलीभूत होता है। मेवाड़ के भीलों के भारत नामक लोकगाथा में वट के राजा वासुकि की बाड़ी से धरती पर आने, देवी-देवताओं द्वारा इसे लाकर प्रतिष्ठित करने का बड़ा रोमांचकारी वर्णन मिलता है।

हां तो बात चल रही थी वट से विवाह की मन्नत मांगने की। ऐसे लड़के-लड़की जिनका सगपण नहीं होकर विवाह नहीं हो पाता है वे कुंवारे वट के वहां जाकर उसकी टहनी में किसी लाल कपड़े में लपेटकर ईंट या उसका टुकड़ा लटका आते हैं। शादी हो जाने के बाद दोनों विवाहित जोड़े सहित वहां जाकर पेड़ पर बांधी गई वह ईंट खोलते हैं और मनौती पूरी करते हैं।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि दिनोंदिन ऐसे कुंवारे-कुंवारियों की संख्या बढ़ती जा रही है और ऐसे विवाह के पश्चात बड़ा सुखमय जीवन जी रहे हैं। **- म. भा.**

आदिम समाज यथार्थवादी जीवन की धारा लिये है

-डॉ. कहानी भानावत-

आदिम गंध की बात करते ही हमारा ध्यान उन आदिवासियों की ओर चला जाता है जो अपनी प्रकृति, परिवेश, परम्परा और पहचान में हमसे

भिन्न हैं। वे पूर्णत: प्रकृति से आत्म चैतन्य लिये जंगलवासी, वनवासी जीवन के सुखभोगी हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि हम सब जीवजगत परमपिता की धड़कन हैं। सबसे बड़े जीवधारी परमात्मा के पांच तत्व हैं। ये ही पंच जीव हैं। इनमें पृथ्वी, आकाश, वायु, अग्नि और वनस्पति ये सब जीवधारी हैं। इनके बिना हमारा जीना मुश्किल है। हमारी स्वांस एक डोरी की भांति है जो उसके हाथों में है या उसकी स्वांस की धमनी से जुड़ी है। इसलिए वही सबकुछ हमसे कराता है। हमारा अस्तिव उसके हाथ, उसके साथ है।

ऐसी मान्यता वाला आदिम समाज यथार्थवादी जीवन की धारा लिये है। वहां कल्पना नहीं है। हमारी कल्पना जहां नहीं पहुंचती वहां तक बल्कि उससे भी आगे उनका यथार्थ है। हमने देखा ही क्या है। उन्होंने जो देखा, भोगा, छुआ उसकी कल्पना करना भी हमारे नसीब में नहीं है।

इसीलिए उनकी रचना और उनका सृजन कल्पनाजीवी नहीं है। बनावटी और बेबुनियादी नहीं है। उन्होंने पूरे ब्रम्हांड को अपना लोक माना है। उनके जीवनानुभवों में प्रकृति के सारे उपादान उनसे कहीं अधिक वैशिष्ट्य, विचित्र, चमत्कारिक, रहस्यमय और अनोखे अनुपम हैं। इसी भावना के वशीभूत होकर उनके लिए सूरज, चांद, इन्द्र, समुद्र, वृक्ष, हवा सब देवता हैं। ये सारे के सारे हमारे मनुष्य लोक को चलाते हैं जैसे ड्राईवर रेल, मोटर, हवा गाड़ी चलाता है। मनुष्य तो माध्यम मात्र है।

इसीलिए जब हम आदिवासियों के चित्रांकन की बात करते हैं तो हमें उनके जीवन-लोक को

समझना होगा। उनमें यह धारणा है कि मनुष्य को पूर्वजन्म, वर्तमान जीवन और भावी जीवन के घेरे में रहकर धरती पर पसरी चौरासी लाख जीव योनियों से गुजरते हुए जाना-आना है।

यह उस परम शक्ति की खूबी है कि वह हमारा पूर्व-परा ज्ञान भी हमसे छीन लेता है इसीलिए हम पूर्व में क्या थे, जो अभी हैं वे कब तक, कैसे यहां रहेंगे और काया छोड़ने के बाद हमारा क्या होगा, कुछ भी नहीं जानते। कई रूपों में देवता नानारूप धारण कर धरती पर विचरण करते हैं। हम उन्हें नहीं पहचानते। वे कभी हम जैसे, कभी किसी रूंख रूप में, कभी कोई जानवर रूप में, कभी किसी जड़ रूप में हमारे सामने होते हैं पर हम उन सबसे अनजान बने रहते हैं। यहां तक कि सपना भी पूरा नहीं देते हैं और देते हैं तो उसका यथार्थ हमसे छीन लेते हैं।

सृष्टि के इन विभिन्न रूपों से जुड़े कई कथानक, कई मिथक, कई गावणियां, कई गीत, कई गाथाएं प्रचलित हैं जो संसार की रचना से लेकर उसके फैलाव की बातें कहते हैं इसलिए हर गांव में देवताओं की पूजा, प्रतिष्ठा और उनके आह्वान के लिए गांव वाले पूरे विश्वास और आस्था के साथ मनावण करते हैं, अरदास करते हैं, लुलि-लुलि बारम्बार नमन-वंदन करते हैं। देवता उनकी सुनी को टालते नहीं हैं। उनके शरीर में कंपकंपी, धूजणी देकर अपनी उपस्थिति देते हैं और उनकी हर समस्या का निवारण करते हैं।

यह सब कुछ जो वे जीते हैं, उनकी चित्रकारी के विषय बनते हैं। यह कितनी विस्मयजनक स्थिति है कि वे जो भी चित्र बनाते हैं उसके पीछे लम्बा कथा-बीज है। उदाहरण के लिए सेमल के पेड़ पर मोर का चित्रांकन ले सकते हैं। इसे देखने पर कोई उत्सुकता नहीं बनती। न इसमें कोई वैशिट्य ही लगता है पर जब उसकी पीठिका को जानने की चेष्टा की जाती है तो रहस्य की गुंडी-दर-गुंडी खुलती जाती है। डॉ. महेन्द्र भानावत ने आदिवासियों के बीच रहकर उनकी चित्रकला पर गहरा अन्वेषण करते लिखा-

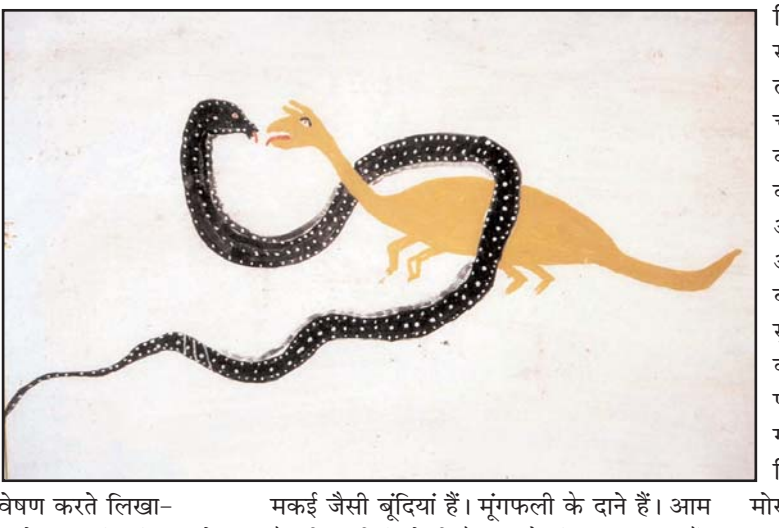

सेमल के पेड़ पर मोर का चित्रांकन। पेड़ सूखा हुआ। सूखी डालियां। एक भी पत्ता नहीं। किस्सा है कि मोर और मेघ दोनों भाई हैं। दोनों खेलते-खेलते लड़ पड़े। मेघ बोला-'तेरा जीना हराम कर दूंगा। मैं बरसूंगा तो तेरा जीवन बचा रहेगा।' मोर बोला- 'हेंकड़ी मत मार। यदि ऐसा ही है तो करके दिखादे।' हार जीत हुई।

मेघ अपनी असलीयत पर आ गया। नाराजगी ली तो बारह बरस तक चुप्पी साधे रहा। बरसा ही नहीं। अकाल पड़ गया। सब मरने लगे। मोर सेमल की खोखल (तने के छेद) में जा छिपा। सफेद कंकड़ खाकर जैसे-तैसे समय काटा। बोला- 'मेघ पापी और महा दुष्टि है। सारी नदियां सूख गई हैं। पानी की एक बूंद भी नजर नहीं आती। कितना पाप चढ़ गया है उस पर।'

मेघ यह सुन और गुस्से से भर्राया। नहीं बरसा। मोर बोला- 'मैं मरने वाला नहीं। हवा की नमी मुझे जिन्दा रखेगी पर तुझे तो गाली ही देगी।' उसका यह कथन मेघ को लगा। गुस्से में ही सही, वह बरसा और इतना बरसा कि मोर भी शायद बच पाये पर मोर लगातार बोलता रहा- मे हो, मे हो अर्थात् मैं हूं, मैं हूं। कहते हैं अंत में इन्द्र ने अपनी हार मानी। कहा- 'तू बड़ा मैं छोटा।' तब से मोर आज भी मे हो, मे हो कह अपनी उपस्थिति देता दिखाई दे रहा है। चित्र में मोर पेड़ से चिपका हुआ है। आसमान काला है यानी मेघ बरस रहा है। मोर का चिपकना अकाल को दृश्यगत करता है। दु:ख का दरसाव। अफसोस और चिंता का दरसाव। सृष्टि के नष्ट होने का अवसाद। घने काले आसमान का दरसाव। मेघ यानी इन्द्र का कोपभाजन होना है।

आदिवासी चित्रांकन में एक फलक ही अनेक रूपों में चित्रित मिलता है। उदाहरण के लिए उनके चित्रों में सांप के अनेक आकार-प्रकार, क्रिया-भाव, रूप-स्वरूप और रंग-ढंग की छवियां मिलती हैं। बैलों के ऐसे रंग-रूप मिलते हैं कि उन्हें देख हमारी कल्पना ही काम नहीं करती पर लाल-पीले, हरे-नीले बैलों का रंग हमारे लिए निरर्थक-व्यर्थ हो सकता है पर उनके विशिष्ट अर्थ हैं। उनके पास पीली सरसों की लहलहाती फसलें हैं। गहरा हरा रंग लिए जानवरों के खाने की हरी घास, रचका है। बालियों से निकाले गेहूं हैं। पेंकड़ों से निकाली ज्वार है। चने, चंवले जैसे बुदके हैं। मकई जैसी बूंदियां हैं। मूंगफली के दाने हैं। आम है, नीम की निमोली है। सबके रंग जुदा-जुदा हैं।

कहने को एक सर्प के ही कितने रूप उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में देखने को मिलते हैं जो हमारे देखने में नहीं आये और न हम उनकी कल्पना ही कर सकते हैं पर उनकी चित्रकारी से ही हमें यह पता चलता है कि उनकी दृष्टि कितनी प्रकृतिमय रंगावलियों के साथ संश्लिष्ट बनी हुई है।

सांपों के कई रूपों में साधारण सांप ही कई तरह के होते हैं फिर देवत्व रूप लिए सांप विशिष्ट और असाधारण स्वरूप लिए होते हैं। शांत स्वभावी सांप, गुस्सेल सांप, जहर उगलते सांप, किल्लोल करते सांप, लघु आकारी सांप, दीर्घ आकारी सांप, सांप-नेवले की लड़ाई, नेवला द्वारा लहूलुहान होता सांप, पांच एवं सात फणी सांप, बंट खाते सांप, लहर देते सांप, रेंगते सांप, दो मुंही सांप, सीधे तने सांप, क्षमाशील सांप, जीवनेच्छा मांगते सांप, सद्गति चाहते सांप, बदला लेते सांप, मणिधारी सांप, उड़ने वाले सांप, झपट्टा देते सांप, कंचुकी उतारते सांप, जहर चूसते सांप आदि। लोकदेवता कल्लाजी पंच फणी सर्प के रूप में हैं। पाबूजी, देवनारायणजी, तेजाजी, गोगाजी आदि देवों के सर्प-कथा के कई मिथक प्रचलित हैं। ये सभी सांप अपना स्वतंत्र और अलग अस्तित्व लिए हैं।

ऐसे ही जानवरों के रूप दिखाई देंगे। घने बादलों की ओट में गरजने वाला जीव अपना असली रंग कैसे दिखायेगा। बादलों की ओट में वह कालिमा लिए दृष्टिगत होगा। बरसात की गहन बौछार के रहते भी कोई प्राणी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। ऐसे पशु चित्र भी मिलते हैं जो सात रंगों में चित्रित किये हुए हैं। पूछने पर बताया गया कि आकाश के जिस छोर पर इन्द्रधनुष अपने गहरे रंगों में शोभित था उसके बीच लोमड़ी देखी गई इसीलिए लोमड़ी वाला चित्र सात रंग लिए है।

कहना नहीं होगा कि प्रकृति के इन सारे उपादानों के बीच आदिवासी भी एक उपादान बन उनके साथ बसेरा कर रहा है इसलिए वह उन सबके साथ एक साथी बना हुआ है। जंगल में वह हिरण की शिकार करते शेर और उनके शावकों, पेंथरों को झपट्टा मारते देखते हैं तो पेड़ों पर वल्लरियों को गले लिपटते-गलबहिया करते भी निहारता है। खेतों में सांप-नेवले की लड़ाई, सांप-सांप का फनकार, सांप-चूहे की लफूंदराई, गिरगिट की बदलती रंगदारी, चीड़ा-चीड़े की चहक, कोयल की कुहु, मोर द्वारा मेहों का आह्वान, बीजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गड़गड़ाहट, पानी का ओटा देता उठाव, अकाल की बेचैनी, अच्छी फसल की आबोहवा, दुधारु पशुओं का रंभाना, घोड़ा बावसी, काला-गोराजी, चगत्याजी, बांक्याजी, सुला, एलवा, आवरा, अंबाव देवियां, भूत-प्रेत का लोक, सातवें पाताल तक की संरचना, फसली जीव, रामजी का घोड़ा, घोंघा, केंकड़ा, गरगलों की पोट, सावन की डोकरी जैसे सैंकड़ों किस्म के रूप-लावण्य देते और टींटोडी, बया, मोर, कूकड़े के अंडों का अंतर आदिवासियों के मन-मस्तिष्क का सनातन शाश्वत संगी है और यह सब उनकी चित्रांकन की रंगीनियों के कूंची-ब्रश से निकलते हैं जो छुईमुई सा स्पर्श देते हैं तो मगरे-मगरियों से कठोर जीवनयापन का संदेश और संकेत भी देते हैं।

मेलों-ठेलों, वार-त्यौहारों अथवा विशिष्ट आनुष्ठानिक अवसरों पर उनके नाच-गान और खुशियों के उल्लास देखते ही बनते हैं। विवाह में दीवालों पर भराड़ी और गोतरेज के चित्रों में गणेश से लेकर सुरसत माई और लाड़ा-लाड़ी के अंकन तथा पेड़-पौधों-पत्तों से फूटते पर्यावरणीय सकोरे एक अजीब तरह की खुशबू से सबको रिझाते-हर्षाते लगते हैं। रात-रात भर नाच-गान करते उनकी मादक मस्ती जीवन में ही नहीं चित्रावण में भी छलकाव देती लमछराती है।

बाजार / समाचार

भारत की जीत में कैफ की अहम भूमिका

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी के मोहम्मद कैफ ने भूटान में सैफ अंडर-16 चैंपियनशिप में भारत के विजयी अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कैफ को 2018 में हिंदुस्तान जिंक की सीएसआर पहल, जिंक फुटबॉल अकादमी द्वारा स्काउट किया गया था। अकादमी से राष्ट्रीय टीम तक कैफ की यात्रा हिंदुस्तान जिंक की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

हिंदुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने कहा कि जिंक फुटबॉल के अस्तित्व के केवल पांच वर्षों में हमने राजस्थान से एक राष्ट्रीय प्रतिभा पैदा की है। हम पूरे दिल से देश के लिए ऐसी और प्रतिभाएँ पैदा करने के लिए अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाना जारी रखेंगे। वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने कहा कि कैफ जैसी असाधारण प्रतिभाओं को निखारने के लिए हमारे प्रशिक्षक और अन्य योजनाओं में जो कड़ी मेहनत की जाती है। भारतीय फुटबॉल के उत्थान के लिए जमीनी स्तर पर हस्तक्षेप अत्यंत महत्वपूर्ण है और हम अपने जिंक फुटबॉल प्रोजेक्ट के अब तक के परिणामों से रोमांचित हैं।

भारत ने 2023 सैफ अंडर-16 चैंपियनशिप के फाइनल में बांग्लादेश को 2-0 से हराया और टूर्नामेंट में अजेय रहा। डिफेंडर कैफ ने टीम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कैफ ने सभी चार मैचों में क्लीनशीट बरकरार रखी।

डॉ. भानावत द्वारा सूक्ष्म पुस्तिकाएं लोकार्पित

उदयपुर (ह. सं.)। सूक्ष्म पुस्तिका निर्माता चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा की बनाई गई तीन सूक्ष्म पुस्तकें आधुनिक हिन्दी के जनक

'भारतेन्दु हरिश्चंद्र की जीवनी', 'हिन्दी दिवस का महत्व' तथा 'हिन्दी वर्णमाला' का लोकार्पण हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा किया गया।

भारत का पहला हैंड ब्लेंडर पेश

उदयपुर (ह. सं.)। बॉस अप्लायंसेज ने भारत का पहला हैंड ब्लेंडर पेश किया है, जिसमें उद्योग की सर्वप्रथम 5 साल की वारंटी है। वर्ष 1985 ने बॉस ने दृढ़ता, निरंतर विकास और रणनीतिक सुधार के साथ अपने मिशन की शुरुआत की। इसका परिणाम भारत के पहले हैंड ब्लेंडर का निर्माण था। एक ऐसा उत्पाद जिसने न केवल खाना पकाने की प्रथाओं को फिर से परिभाषित किया बल्कि भारतीय घरों के संचालन के तरीके को भी आकार दिया। बॉस रसोई नवाचार के एक पावरहाउस के रूप में विकसित हुआ है, जो मिक्सर ग्राइंडर, जूस एक्सट्रैक्टर, फूड प्रोसेसर, ओवन टोस्टर ग्रिलर और कई अन्य उत्पादों सहित विविध प्रकार के उत्पादों में विस्तार कर रहा है। बॉस ने एकल उत्पाद की पेशकश से लेकर 13 अलग-अलग श्रेणियों में 60 से अधिक उत्पादों को शामिल करते हुए एक व्यापक उत्पाद श्रृंखला तक विस्तार किया है। बॉस अप्लायंसेज ने मध्य पूर्व, एशिया, अफ्रीका और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी अपनी छाप छोड़ी है। गुणवत्ता के प्रति ब्रांड की अटूट प्रतिबद्धता ने कठोर विनिर्माण और गुणवत्ता निरीक्षण मानकों के अलावा, आईएसआई, सीबी और जी-मार्क जैसे कड़े भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन करते हुए आईएसओ प्रमाणन प्राप्त किया है।

स्टाइल एन सीज़र्स हेयर, ब्यूटी एंड मेकअप सैलून का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। स्टाइल एन सीज़र्स हेयर, ब्यूटी एंड मेकअप सैलून का शुभारंभ फिल्म अभिनेत्री महिमा मकवाना, रूही चतुर्वेदी, कबड्डी खिलाड़ी दीपक हुडा, यूट्यूबर सूरजपाल, यशिका, बेबी थियु द्वारा किया गया। इस मौके पर निदेशक ऋतु देशवाल, डायरेक्टर बिजनेस डवलप्मेंट भव्य देशवाल, क्रियेटिव डायरेक्टर संजीव कुमार तथा डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन निधि खारीवाल उपस्थित थे।

महिमा मकवाना ने कहा कि सफलता की कोई उम्र नहीं होती। व्यक्ति किसी भी उम्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। जरूरत है तो हिम्मत और हौंसले की। महिमा ने कहा कि उदयपुर बहुत ही सुंदर शहर है। मैं दूसरी बार उदयपुर आई हूं। रूही चतुर्वेदी ने कहा कि उदयपुर देसी-विदेशी मेहमानों से हमेशा गुलजार रहता है। यह शहर हमेशा से ही बॉलीवुड की पसंद रहा है। यहां फिल्मों की शूटिंग होती रहती है और शादी विवाह जैसे आयोजनों के लिए उदयपुर को सबसे सुरक्षित और पसंदीदा शहर माना जाता है। ऐसे शहर में स्टाइल एंड सीजर्स ब्यूटी एंड मेकअप सैलून का खुलना सभी के लिए फायदेमंद रहेगा।

ऋतु देशवाल ने बताया कि स्टाइल एन सीज़र्स हेयर, ब्यूटी एंड मेकअप सैलून ब्यूटी और वेलनेस उद्योग में एक सुस्थापित ब्रांड है। यह ब्रांड पिछले 20 वर्षों से ब्यूटी और वेलनेस में जाना पहचाना नाम है। जयपुर और गुरुग्राम में सफलतापूर्वक संचालन के बाद उदयपुर में इसकी 14वीं शाखा का शुभारंभ हुआ है। सैलून के विशेष उत्पाद बाल, त्वचा और मेकअप उपचार की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। सैलून में वेलनेस सेक्शन और एकेडमी भी होगी। एकेडमी में सभी प्रकार की सैलून स्पा और ट्रीटमेंट संबंधी कोर्स सिखाये जाएंगे। सैलून ब्राइडल मेकअप के लिए खास पहचान रखता है। स्क्रीन ट्रीटमेंट, हेयर ट्रीटमेंट, पिग्मेंटेशन की खासियत लिए यह सैलून उदयपुर में उपभोक्ताओं क मांग के अनुसार खोला गया है।

'कार्डलेस ईज़ी ईएमआई' लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने एंड-टू-एंड डिजिटल उपभोक्ता ऋण 'कार्डलेस ईज़ी ईएमआई' लॉन्च करने की घोषणा की। बैंक ने सभी के लिए ऋण सक्षम करने वाला मंच 100 प्रतिशत डिजिटल-फर्स्ट पे शॉपसे के साथ साझेदारी की है। यह अभिनव पेशकश पूरी तरह से डिजिटल और निर्बाध ऋण अनुभव की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पराग राव, कंट्री हेड - पेमेंट्स, कंज्यूमर फाइनेंस, टेक्नोलॉजी और डिजिटल बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि 'कार्डलेस ईज़ी ईएमआई' कार्यक्रम ग्राहकों को भौतिक दस्तावेजों या सहायता की आवश्यकता के बिना, आसानी से क्रेडिट के लाभों को अपनाने का अधिकार देता है। भाग लेने वाले शॉपसे या बैंक व्यापारियों पर एक सरल क्यूआर कोड स्कैन के माध्यम से, ग्राहक अपनी खरीदारी को सुविधाजनक ईएमआई में बदलने की क्षमता प्राप्त करते हैं। ब्रांडों और व्यापारियों के साथ ये गहन एकीकरण सभी ग्राहकों को 5 मिनट से कम समय में क्रेडिट तक पहुंचने में सक्षम बनाएगा। मौजूदा एचडीएफसी बैंक ग्राहक पूर्व-अनुमोदित ऑफ़र की प्रतीक्षा कर सकते हैं, जबकि नए ग्राहक पहचान के रूप में अपने पैन कार्ड और मोबाइल नंबर का उपयोग करके 12 महीने की अवधि के लिए 60,000 रुपये तक के तत्काल उपभोक्ता टिकाऊ ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल ने 'द ग्लॉस बॉक्स'

उदयपुर (ह. सं.)। तेजी से बदलती दुनिया में ब्यूटी एवं वैलनेस यूं ही बातचीत में इस्तेमाल होने वाले शब्द नहीं रह गए हैं बल्कि इनकी अहमियत बहुत बढ़ गई है। विविध प्रकार के कॉस्मेटिक्स और वैलनेस ब्रांडों के बीच से अपने मन मुताबिक उत्पाद चुनना चाहते हैं तो नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल वो जगह है जहां सभी को आना चाहिए। त्योहारों का मौसम है और ऐसे में सितंबर माह में जानेमाने ब्यूटी ब्रांड शानदार डील्स प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत का सबसे बड़ा रिटेल प्लैटफॉर्म नेक्सस मॉल्स 'द ग्लॉस बॉक्स' की शुरुआत करने को बिल्कुल तैयार है। नेक्सस ब्रांड के पोर्टफोलियो में मौजूद सभी 17 मॉल्स के माध्यम से देशभर में एक अभूतपूर्व कॉस्मेटिक्स, ग्रूमिंग और वैलनेस कैम्पेन चलाई जा रही है जो ब्यूटी एवं वैलनेस इंडस्ट्री के भविष्य को नए आयाम देगी और आपके लिए सुंदरता का एक अनूठा अनुभव लेकर आएगी।

'द ग्लॉस बॉक्स' कैम्पेन 8 सितंबर से लाइव हो जाएगी और इसका लक्ष्य है ब्यूटी एवं वैलनेस के क्षेत्र में नए मानक स्थापित करना। इसमें बहुत से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय वैलनेस ब्रांड, मशहूर मेकअप आर्टिस्ट, ब्यूटी ऐक्सपर्ट और ब्लॉगर भाग लेंगे और नेक्सस मॉल्स पोर्टफोलियो में मौजूद सभी मॉल्स में आगंतुकों को एक शानदार अनुभव प्राप्त होगा। प्रीमियम कॉस्मेटिक्स और वैलनेस उत्पादों का सावधानी पूर्वक तैयार किया गया संग्रह सबसे लोकप्रिय ब्रांडों को नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल में एकजुट करने जा रहा है। उपभोक्ता स्किनकेयर, मेकअप, हेयरकेयर, स्पा, वैलनेस आदि जानेमाने ब्रांडों को महसूस कर सकें।

नई रेंज रोवर वेलार लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। जेएलआर इंडिया ने नई और कई नए फीचर्स से युक्त रेंज रोवर वेलार को लॉन्च किया है। रेंज रोवर वेलार आधुनिक समय के लग्जरी की बेहतरीन अभिव्यक्ति है, जो कई नई लेटेस्ट तकनीक, रेंज रोवर की पहचान रही उत्कृष्टता और बेहद आकर्षक व रिडक्टिव नई डिजाइन से लैस है। नई रेंज रोवर वेलार दो पावरट्रेन विकल्पों के साथ डायनैमिक एचएसई में उपलब्ध है। 2.0 लीटर पेट्रोल इंजन वाला विकल्प, जो 184 किलोवाट की शक्ति और 365 एनएम टॉर्क प्रदान करता है, वहीं दूसरा विकल्प 2.0 लीटर इंजीनियम डीजल इंजन है, जो 150 किलोवाट की शक्ति और 430एनएम टॉर्क प्रदान करता है।

जेएलआर इंडिया के प्रबंध निदेशक, राजन अंबा ने कहा कि नई रेंज रोवर वेलार भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उत्कृष्टता के साथ तैयार की गई कार है, जो इसे दिलचस्प और मनचाहा दोनों ही बनाता है। इसे हमारे समझदार ग्राहकों के बदलते मिजाज के लिहाज से बारीकी से तैयार किया गया है, जो भारत में लक्जरी यात्रा के स्तर को नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए पूरी तरह से तैयार है। नई रेंज रोवर वेलार एक बेमिसाल सुंदरता और रोमांचक मौजूदगी के साथ स्वाभाविक उत्कृष्टता का प्रतीक है। इसकी नवीनतम तकनीक और रिडक्टिव डिजाइन आधुनिक लक्जरी पर हमारे लक्ष्य के मुताबिक है।

बिइंग ओल्ड पुस्तक विमोचित

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के पूर्व कार्यकर्ता

प्रो. राजभांति द्वारा लिखित पुस्तक बिइंग ओल्ड का विमोचन कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, प्राचार्य डॉ. अवनिश नागर, डॉ. लालाराम जाट, डॉ. नवलसिंह राजपूत ने किया।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि 90 वर्ष की उम्र में पुस्तक लिखना अपनेआप में आश्चर्य की बात है। पढ़ने व लिखने की कोई उम्र नहीं होती है। आज के युवाओं में पढ़ने की प्रवृत्ति खत्म होती जा रही है वे केवल किताबी ज्ञान ही प्राप्त कर रहे है जो चिंता का विषय है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए किताबी ज्ञान के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी जरूरी है।

इस अवसर पर डॉ. वीणा द्विवेदी, डॉ. सीता गुर्जर, डॉ. अनुकृति राव, डॉ. प्रिंस पॉयस जॉन उपस्थित थे।

ओसवाल सभा के चुनाव 8 अक्टूबर को

उदयपुर (ह. सं.)। ओसवाल सभा के चुनाव आगामी 8 अक्टूबर रविवार को ओसवाल भवन में होंगे। चुनाव संयोजक रमेश चौधरी ने बताया कि अध्यक्ष एवं कार्य परिषद सदस्यों के नामांकन पत्र 17 से 27 सितंबर तक भरे जा सकेंगे। नाम 30 सितंबर तक वापस लिये जा सकेंगे। 1 अक्टूबर को अध्यक्ष पद व कार्य परिषद के प्रत्याशियों की सूची सभा कार्यालय पर लगा दी जायेगी। चुनाव सम्बन्धी सभी कार्य प्रात: 10 से 5 बजे तक होंगे। मतदान प्रात: 9 से सायं 4 बजे तक होगा।

अपना देश अपनी संस्कृति

गांठ बांध चांदोड़ी रुपये

मेवाड़ में एक से बढ़कर एक भांड-बहुरुपिये हुए जिन्होंने जनसमुदाय के मनोरंजन के साथ-साथ महाराणा को भी अपने स्वांगों से प्रभावित कर बड़ा सम्मान पाया। चित्तौड़ के हजारी भांड से मिलकर जो बातें मैंने सुनीं वे भांड-कला की अविश्वसनीय एवं अकल्पनीय ही थीं। मेरे साथ अमेरिका की ब्राउन यूनिवर्सिटी के डॉ. जोहन एमी थे जो प्रदर्शनकारी कलाओं के विशेषज्ञ एवं दक्ष अभिनेता थे। वे अपने प्रदर्शनों में मुखौटों का प्रयोग करते थे। ऐसे लगभग 50 मुखौटे उनके पास थे। इंडोनेशिया और बाली होकर वे यहां अध्ययनार्थ आये थे।

साठ वर्षीय हजारी से हमारी भेंट 11 दिसंबर 1982 को हुई। उसने बताया कि भांड एक जाति विशेष है किंतु बहुरुपिया कोई भी हो सकता है जो भांति-भांति के स्वांग भरने की कला में निपुण हो। उसने सुनाया कि जयपुरवासी का रामचंद्र ब्राह्मण बड़ा प्रसिद्ध बहुरुपिया था जिसके पास इतना सामान था कि रेल का पूरा डिब्बा भर जाय। एकबार उदयपुर महाराणा भूपालसिंह पीछोला में नाव की सवारी पर थे तब उन्होंने नाव के पास एक विशाल मगरमच्छ को मुंह फाड़े देखा जो नाव का पीछा कर रहा था। महाराणा के साथ अच्छे शिकारी थे जो पीछोला में पहलीबार ऐसे भीमकाय मगर को देख चकित थे। महाराणा भी निर्भय थे। बाद में जब पता चला तो महाराणा द्वारा उसकी बड़ी वाहवाही हुई और धोबे भर चांदोड़ी (चांदी के)रुपये देने का हुकम हुआ।

हजारी को यह किस्सा उसके दादा जोराजी ने सुनाया जो मांडल के पास भांड का खेड़ा में रहते थे। तब से हजारी के मन में गहराई से यह बात बैठ गई कि आगे जाकर वह भी ऐसी ही कला में दक्षता प्राप्त करेगा और हुआ भी यही। अपनी कला को उसने इतना साधा कि महाराणा द्वारा उसे धोबे भर-भर ही नहीं, गांठ बांध-बांधकर चांदोड़ी रुपयों की बख्शीश मिली।

हजारी के दादा ने चित्तौड़ के जंगलों में महाराणा फतहसिंह को अपना चमत्कार दिखाया। जब महाराणा को असल नवहत्था केसरी शेर होने की भनक मिली तो वे शिकारियों के साथ पहुंचे। महाराणा ने निशाना साधा। उनकी गोली से शेर दो पांवों पर खड़ा हो गया। उसके सीने से खून का फव्वारा छूटा। बोला- खम्माघणी अन्नदाता, म्हूं जोरो भांड छूं। यह सुन महाराणा बड़े विस्मित हुए। बोले- गजब व्यो। जोरो भांड मार्‌यो ग्यौ। सब उसके पास पहुंचे तो देखा कि जोरा अपने तन से जिरह बख्तर उतारकर पास बह रहे नाले में अपने खून से सने हाथ धो रहा था। महाराणा खुश हुए। मोहर मगरी के पास उसे दस बीघा जमीन और इनाम दिया।

हजारी ने बताया कि सामंतीकाल में मेवाड़ के हर ठिकाने में हमारी अच्छी पूछ थी। खूब इनाम-सम्मान मिलता और हम भी प्रशंसा के पुल बांध पूरी भांडाई करते। कभी-कभी हमारी प्राप्ति में कसर रह जाती तो हम आलोचना भी कर बैठते जिससे अगलीबार हमारा अच्छा मान-सम्मान हो जाता।

ओरड़ी गांव के ठाकुर कल्याणसिंह हजारी के यजमान थे। एकबार हजारी उनके सम्मुख थानेदार का स्वांग लेकर गया। वह स्वांग इतना प्रभावी रहा कि ठाकुर साहब ने पांच बीघा जमीन उसके नाम कर दी। हजारी ने ठाकुर साहब के सम्मान में जो भांडाई की वह इस प्रकार थी-

ओरड़ी नगर माइने सुरपुर हरिधाम।
राठौड़ भूप आप अठे थाने सुखी रखे घनश्याम।।
जानत सकल जहान आछा आप अवतारी।
नो खंड मांहे नाम सदा रहे सुभकारी।।
कल्याणसिंह कुल भांण, भुजाउ पृथ्वीसिंह गिणीजे।
मोड़सिंह महाराज गेरे हिम्मत गिणीजे।।
देवीसिंह दिल दातार रजवट वट सब राखसी।
थाने सुखी राखे घनश्याम हजारी भांड गुण गाणसी।।

हजारी करीब 60 प्रकार के स्वांगों से सबका मनोरंजन करता है। मुख्य स्वांग है- मगरमच्छ, गाड़ोलिया लुहार, फकीर, पठान, भैरू झोली, शिव, हनुमान, कालका, बणजारा, डाक्टर, कंजर-कंजरी, पागल, लैला मजनू, ईरानी, खाकीजी, पुलिस वाला, राक्षस, नकटी, भील, सेठ-मुनीम, पेटवाली (गर्भिणी), धोबिन, मालन, लक्ष्मी, अड़भोपा आदि। हजारी अखाड़े का उस्ताद भी है। कुश्ती अछदी करता है। टूटी हड्डी जोड़ने में भी उस्ताद है। कइयों को इलाज कर चंगा किया है।

अब कहाँ वीरानियों की सेरी

उदयपुर मे मालदास की सेरी, मट्टो की सेरी की तरह गणेशघाटी से जुड़ी वीरानियो की सेरी थी जो महावत वाड़ी से जा मिलती थी। तब वीरानियो के 22 परिवार थे। आज मात्र एक परिवार दलपतसिंह वीरानी (80) का रह गया है।

दलपतसिंहजी ने बताया कि पुंवार जाति के कुनणपुर के राव जैसिंह से वीरानी जाति का अस्तित्व जुड़ा हुआ है। जैसिंह के पुत्र कीरतपाल के वंशज कुंदणेचा कहलाये। दूसरा पुत्र रतनपाल था जिसकी संतान जोटा कहलाई। यह घटना संवत् 1189 की कही जाती है।

इसी परिवार के वंशजो द्वारा संवत् 1269 मे महावीरजी के गढ़ चित्तौड़ के किले पर वीरप्रभु का मंदिर बनाया गया जिसकी प्रतिष्ठा भट्टारक हरिभद्र ने करवाई। यही से वीरानी गोत्र चली। यहाँ से कुछ वीरानी मालपुरा चले गये। एक सदावछजी थे जो भीलाड़ा-भीलवाड़ा जा बसे। दूसरे अड़बोजी थे जो उदयपुर आ गये।

दलपतसिंहजी ने बहीवाचक से प्राप्त वीरानी-पीढ़ियो की विगत के रूक्के के अनुसार उदयपुर आये अड़बोजी की वंशावली इस प्रकार बताई -

(1) अड़बोजी (2) रतनोजी (3) पदारथजी (4) लखमीदास (5) हंसराज (6) कपूरचन्द (7) गमेरदास (8) लालचंद (9) मूलदास (10) मुरारीदास (11) रोड़ीदास (12) रतनलाल (13) चमनलाल (14) अबूजी (15) गुलाबचंद (नाती गोद आया) (16) कसनजी (17) बैजनाथ (18) कसोरजी (19) वागमल (20) रवुमाणसिंह (21) सवदास (22) मोतीराम (23) नरसिंहदास (24) भगजी (25) जवानजी (26) डालचंद (27)संग्राममसिंह (28) दलपतसिंह (29) बसंत, राजेंद्र एवं प्रकाश (वर्तमान)।

भगजी महाराणा फतहसिंह के काल मे थे। डालचंदजी जब पांच वर्ष के थे, उनकी नेत्र ज्योति जाती रही। धर्म एवं अध्यात्म के प्रति उनकी गहरी रूचि थी। उन्हे बत्तीस सूत्र कंठस्थ थे। इन सूत्रो के वे अच्छे व्याख्याकार भी थे। उनकी मृत्यु के पश्चात जब उनकी पत्नी घट्टी फेर रही थी तब केसरिया रंग का आटा निकला। इससे यह समझा गया कि डालचंदजी देवत्व को प्राप्त हुए है।

संग्राममसिंहजी जागीरदार थे पर घोर स्वाभिमानी और ईमानदारी का जीवन जीने के कारण सम्पन्नता से कोसो दूर रहे। वे महाराणा फतहसिंह के बड़े विश्वासपात्र थे। उनके निज खजाने की चाबी इनके पास रहती थी। जब महाराणा का निधन हुआ तो उस खजाने से सत्रह करोड़ रुपये निकले।

महाराणा ने संग्राममसिंहजी को कोर्ट ऑफ वाइस मे लगा दिया जिसके अन्तर्गत किसी जागीरदार के नही रहने पर उसके परिवार के नानपण पड़ने (अनाथ होने) के समय उसकी देखभाल का जिम्मा राजघराने का रहता था।

सबसे कठिन है कविता का अनुवाद : कुंदन माली

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी के लेखक से मिलिए कार्यक्रम में शहर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. कुंदन माली ने कहा कि साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा कविता का अनुवाद कठिन होता है। ऐसा इसलिए कि प्रत्येक पाठक के अनुसार कविता के कई अर्थ निकलते हैं किंतु कहानी, निबंध आदि में सीमित अर्थ सीमित होते हैं।

अकादमी अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने बताया कि अकादमी के सहयोग से बारां हिंदी प्रचारिणी सभा भवन में आयोजित हुए कार्यक्रम में प्रो. माली ने अपनी रचना यात्रा के बारे में बताया कि जमीन से जुड़े होने के कारण ही उनकी कविताओं में चुटीलापन और व्यवस्था के प्रति आक्रोश का भाव आया है। गुजराती से हिंदी, हिंदी से गुजराती, गुजराती से राजस्थानी, अंग्रेजी से हिंदी भाषा में अनुवाद कर चुके कुंदन माली ने अनुवाद को सांस्कृतिक पुल बताया और कहा कि अनुवाद में एक भाषा की संस्कृति दूसरी भाषा में अपने आप चली आती है। रचनाकार को खुश करना आलोचक का कर्तव्य नहीं होना चाहिए बल्कि आलोचना के मानकों के आधार पर रचना की समीक्षा करनी चाहिए। सोशल मीडिया पर रचना प्रेषित कर स्वयं को साहित्यकार मानने वालों को धीरज रखकर रचनाकर्म जारी रखने का सुझाव देते हुए उन्होने कहा कि समय आने पर उनकी रचनाओं की समीक्षा अपने आप हो जाएगी। सहारण ने बताया कि कुंदन माली की हिंदी, राजस्थानी व अंग्रेजी में अब तक 29 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कविता, आलोचना व अनुवाद तीनों विधाओं में उनकी पुस्तकों को केंद्रीय अकादमी के साथ ही राजस्थान साहित्य अकादमी व राजस्थानी भाषा, संस्कति और साहित्य अकादमी बीकानेर से पुरस्कार मिल चुके हैं। साक्षात्कार कहानीकार गौरीकांत शर्मा ने किया।

सालासर बालाजी की मन्नत

बीकानेर। मनौती पूरी करने के लिए 02 सितम्बर 2023 को सुधा नागोरी ने अपने परिवार सहित सालासर बालाजी के दर्शन कर 51 किलो लड्डू का भोग चढ़ाया। उनके साथ अमित-कल्पना, अनिता, राजा, जिनेश नागोरी तथा डॉ. कविता-डॉ. सतीश मेहता थे। **- डॉ. कविता मेहता**

हिन्दुस्तान ज़िंक को मिले 7 पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान जिंक को शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, पहल और परियोजनाओं के लिए 27वें भामाशाह सम्मान समारोह में सात पुरस्कार मिले। जिंक के चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर को प्रथम स्थान मिला। इसके अलावा जिंक स्मेल्टर देबारी, राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स, जावर माइन्स, रामपुरा आगुचा माइन, कायड़ माइन और केंद्रीय सीएसआर टीम प्रधान कार्यालय को शिक्षा क्षेत्र में सकारात्मक योगदान के लिए पुरस्कार मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला, शिक्षा विभाग के शासन सचिव नवीन जैन, शिक्षा निदेशक डॉ. कानाराम, विशिष्ट सचिव शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज चित्रा गुप्ता एवं अतिरिक्त सचिव शिक्षा विभाग किशोरकुमार द्वारा प्रदान किये गये।

हिन्दुस्तान ज़िंक के सीएचआरओ मुनीश वासुदेव, चंदेरिया लेड ज़िंक स्मेल्टर के लोकेशन हेड कमोदसिंह, राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स से एसबीयू डायरेक्टर राजेन्द्र अग्रवाल, सीएसआर अधिकारी नम्रा यशा, प्रधान कार्यालय से सीएसआर अधिकारी रूचिका चावला, कायड़ माइन के हेड केसी मीणा, हेड सीएसआर विवेककुमार सिंह, ज़िंक स्मेलटर देबारी से लोकेशन हेड मानस त्यागी, हेड सीएसआर अरूणा चीता, रामपुरा आगुचा के मिल हेड जे बालासुब्रमण्यन, सीएसआर हेड अभय गौतम, उप प्रमुख सीएसआर अधिकारी विशाल अग्रवाल एवं जावर माइंस से सीएसआर अधिकारी गौरी ने यह पुरस्कार प्राप्त किये।

डॉ. भानावत को लोकजन मनीषी सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। लोकजन सेवा संस्थान ने हिंदी दिवस पर पिछले सात दशक से मूर्धन्य हिन्दीसेवी लेखन कर रहे डॉ. महेन्द्र भानावत को उनके निवास पर पहुंच 'लोकजन मनीषी' के रूप में सम्मानित किया।

डॉ. भानावत ने कहा कि आजादी के बाद हिंदी का प्रभुत्व सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा के रूप में बढ़ा है। इसके साथ ही आंचलिक भाषा-बोलियां भी मुखरित हुई हैं। विदेशों में भी हिंदी की पताका का परचम अनेक विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में पठन-पाठन का सशक्त माध्यम बना है। हिन्दी ने अपने साथ कई आंचलिक भाषाओं को भी समृद्ध किया। उन्होंने स्वयं अपने हिन्दी लेखन में हजारों मेवाड़ी शब्दों का समावेश किया है जिसे लोगों ने खुले मन से स्वीकार किया जो आज भी प्रचलन में है। डॉ. भानावत ने लोकजन सेवा संस्थान को दायित्व दिया कि वे नव लेखकों को हर संभव प्रोत्साहित करें ताकि वे अनछुई विधाओं में शोध कर लिपिबद्ध करें।

संस्थान के अध्यक्ष प्रो. विमल शर्मा ने बताया कि डॉ. भानावत को साहित्य वारिधि, लोककला मनीषी, सृजन विभूति, लोकसंस्कृति रत्न, श्रेष्ठकला आचार्य जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। संस्थान महासचिव जयकिशन चौबे ने बताया कि डॉ. भानावत राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, राजस्थानी साहित्य भाषा और संस्कृति अकादमी, जवाहर कला केंद्र, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सदस्य रह चुके हैं। इस अवसर पर उन्हें अध्यात्म दर्शन के प्रख्यात संत आचार्य महाप्रज्ञ लिखित ध्यान क्यों तथा पहला सुख निरोगी काया पुस्तकें भेंट की।

इस दौरान गणेशलाल नागदा, इन्द्रसिंह राणावत, रंजना भानावत, नरेन्द्र उपाध्याय, चंद्रप्रकाश चित्तौड़ा, ओमप्रकाश माली तथा मनीष गोलछा उपस्थित थे।

केलेश्वर महादेव मेला

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर जिले के कानोड़ कस्बे से आठ किलोमीटर दूर लूणदा गांव के पास केलेश्वर महादेव का अत्यन्त ही आस्था तीर्थ है जहां सर्व

समाज के लोग एकत्र हो अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति करते हैं। वैसाखी पूर्णिमा को यहां बड़ा भारी मेला भरता है जहां आसपास के डूंगला, धरियावद, बोहेड़ा, वानसी, बड़ीसादड़ी से लेकर ठेठ दूर प्रतापगढ़, डूंगरपुर तक के लोग आते हैं। कई तरह के मनोरंजन प्रदान करने से लेकर खानपान तथा गृहस्थ जीवन के लिए उपयोगी सामग्री एवं कृषिमूलक चीजें खरीदकर मेलार्थी अपनी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।

कानोड़ निवासी प्रतिवर्ष ही इस मेले के प्रत्यक्षदर्शी पत्रकार अध्येता भरत जारोली ने बताया कि केलेश्वर नाम केल के वृक्षों की अधिकता के कारण पड़ा। अब तो इक्के-दुक्के केल वृक्ष ही देखने को मिलते हैं। यही कारण है कि यह नाम अब केल की बजाय केर से केरेश्वर महादेव के नाम से प्रचलित हो गया है। किसी समय यहां घना जंगल होने से कोई भी सुबह और शाम-रात्रि को आने का साहस नहीं करता था। यहां तक कि पुजारी भी लूणदा से नहीं आ पाता था सो महादेव की सेवा-पूजा दिन को बारह बजे होनी शुरू हुई जो आजतक चली आ रही है। दिन में केवल एक ही बार महादेवजी की भक्ति हो पाती है। पुजारीजी के वर्तमान में तीन भाई होने के कारण वर्ष में चार-चार माह का ओसरा आता है।

मीणा आदिवासियों की इधर अधिक बस्ती होने के कारण इस समुदाय के लोगों ने पास ही बड़ा भव्य कालाजी का मन्दिर बनाया है। इसमें देवता की प्रतिमा काले पत्थर की होने से ही यह नाम चल पड़ा।

महादेवजी से पांच-छह किलोमीटर की दूरी पर कारा गांव स्थित है। यहां से जो नदी निकलती है वह गोमती नाम से विख्यात है। इसका पानी गंगा की तरह पवित्र होने और इसमें अस्थि विसर्जन करने के कारण यह मेवाड़ की गंगा कही जाती है।

देवों के देव महादेव का ही यह चमत्कार कहा जाता है कि गर्मी के दिनों में नदी में तो पानी नहीं रहता है पर महादेव के स्थल पर जो नदी बहकर जाती है वह बहने लग जाती है। यहीं एक छोटा-सा खड्डा था जो बाद में कुण्ड का रूप धारण कर गया, उसमें पानी वर्ष भर ही भरा रहता है।

इसकी विशेषता यह है कि चाहे बरसात हो या सूखा, इसका पानी जितना है उतना ही बना

रहता है। न अधिक हो पाता है न कम ही। इसके आसपास कोड्या वृक्षों की बहुतायत होने के कारण उसके पत्ते, फल, फूल, छाल आदि कुण्ड में निरन्तर गिरते रहने से कुण्ड के पानी में नहाने से कोढ़जनित दाद-खुजली जैसे रोग नष्ट हो जाकर रोगी चंगा हो जाता है। प्रसिद्धि है कि मेवाड़ महाराणा कुम्भा ने भी इस कुण्ड में नहाकर अपनी कोढ़ दूर की थी। गोमती नदी की गंगा सम पवित्रता के कारण ही यहां मूर्दे जलाये जाकर अस्थि विसर्जन भी किया जाता है। दाह संस्कार तथा तर्पण आदि केवल आदिवासी समाज के लोग ही नहीं, सर्व समाज के लोगों द्वारा किया जाता है। अब तो मन्दिर के पास दो और विशाल कुण्ड बना दिये गये हैं जो बारह मास पानी से भरे रहते हैं। पास ही एक बन्दा अर्थात् बांध बना दिया गया है।

लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि उन्होंने बचपन में सन् 1947 से 52 तक प्रतिवर्ष ही मेले में अपने गांव कानोड़ से पैदल यात्रा की है। तब मेले में अनेक तरह की दुकानों की लम्बी कतार लगती थी। विविध प्रकार के झूलों की, मिठाइयों की, चरके-मीठे भुजिया, गुलगुले, मालपुए, वासुन्दी, कलाकन्द, पतली मोटी सेव, पपड़ी, पापड़े, खिलौनों की लोहे की छोटी-बड़ी साइज की पेटियों की दुकानों से बड़ी संख्या में लोग खरीद फरोख्त करते थे। मेले में मुख्यत: आदिवासी बालाएं अपनी जंघा, हाथ की कुहनी, ललाट, गाल तथा पीठ पर मशीन से तरह-तरह के गुदने गुदवाती थीं। गुदवाने को खणवाना कहते थे। तब डॉ. भानावतजी ने भी अपने हाथ पर तब का नाम मीठुलाल खुदवाया था।

भरत जारोली ने बताया कि केलेश्वर के पास का सबसे बड़ा गांव कानोड़ है जहां से मेले पर सर्वाधिक दुकानें और सर्वाधिक मेलार्थी जाते हैं। इस मौके पर मीणा समुदाय के पुरुष-स्त्री अन्य सामाजिकों से मिलकर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं और मृतकों के अस्थि विसर्जन पर जो पूरे संस्कारपूर्वक रूदन करते हैं वह दृश्य बड़ा ही कारूणिक होता है। ऐसे प्रसिद्ध मेले मेवाड़ में और भी कई जगह भरते हैं।

डॉ. भानावत के अनुसार मेले में बच्चों के खिलौनों की बिक्री सर्वाधिक होती। इनमें छोटे-छोटे बच्चों के पालने में लटकाने की झूमर, चूंकणी अर्थात् चूसनी, हाथी, घोड़े, रेलगाड़ी, पुतलियां, खेलने के पछेटे ; ये सब हल्की लकड़ी के बने होते। इनके अलावा रबड़ की छोटी-मोटी गेंदें मुख्य होतीं।

खांड अथवा शक्कर के खिलौनों में चने के ऊपर खांड चढ़े खांडचने, सिंघाड़े, महल के आकार के महल, खांड के छोटे-छोटे गोले, मणके, पतासी, बड़े आकार के पतासे बच्चों के विशेष आकर्षण होते। ऐसी और भी कई चीजें होतीं जो मेले में ही बिकने आतीं। अन्य आड़े दिनों में इनकी बिक्री नहीं होती और मेले में ही विशेष बहार के साथ इन चीजों की खरीद फरोख्त के लिए अभिभावक बच्चों को खर्ची भी देते।

नंद चतुर्वेदी पर साहित्यिक मंथन

उदयपुर (ह. सं.)। प्रसिद्ध समाजवादी कवि और साहित्यकार नंद चतुर्वेदी की रचनाएं मूलत: समाज के उन सभी पक्षों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो आधुनिक समाज में परिलक्षित हो रही हैं। इन रचनाओं में जहां एक ओर स्त्री के प्रति चिंता है तो दूसरी ओर समाज के प्रत्येक वर्ग के प्रति संवेदनशीलता, राजनीति और आधुनिकता पर कटाक्ष है तो मानवतावादी चिंतन का प्रतिनिधित्व भी।

उक्त विचार राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर और विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट के हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी 'नंद चतुर्वेदी : साहित्यिक मंथन' विषय पर मुख्य वक्ता प्रख्यात समीक्षक प्रोफेसर माधव हाड़ा ने व्यक्त किए। प्रोफेसर हाड़ा ने कहा कि नंद चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य का वह नाम है, जिन्होंने अपनी रचनाओं से अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थान को एक विशिष्ट स्थान देने का उल्लेखनीय योगदान दिया है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते श्रीमती पुष्पा शर्मा ने कहा कि नंद चतुर्वेदी एक निर्भीक और संवेदनशील कवि थे, जिनका लक्ष्य समाज में गैर बराबरी को मिटाना था। उन्होंने नन्द चतुर्वेदी की तुलना कबीर से करते हुए कहा कि वे कबीर की ही तरह सरल और सहज अभिव्यक्ति वाले कवि थे।

डॉ. मंजू चतुर्वेदी ने कहा कि नंद बाबू का साहित्य जहां स्त्री सशक्तता का समर्थन करता है, वहीं उनकी लेखनी में लोकतांत्रिक मूल्यों का भी उल्लेख नजर आता है। डॉ. चंद्रकांता बंसल के अनुसार नंद चतुर्वेदी लोक मन के कवि रहे हैं और उनकी रचनाओं में मानव जीवन का संघर्ष उजागर होता है। डॉ. नवीन नंदवाना ने नई कविता के आंदोलन के पुरोधा के रूप में नंदजी को याद किया। डॉ. राजेश शर्मा ने नंद बाबू की विशिष्ट लेखन शैली और भाव अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला। किशन दाधीच ने नन्द चतुर्वेदी को मानवतावादी साहित्यकार के साथ एक स्वतन्त्रता सेनानी बताया जिन्होंने अपने जीवन मूल्यों को लोक जीवन पर आधारित किया।

-डॉ. सरस्वती जोशी

मेले हमारी धार्मिक आस्था व संस्कृति के पावन केन्द्र : बोराणा

जोधपुर (ह. सं.)। तीर्थ और मेले हमारी धार्मिक आस्था व संस्कृति के पावन केन्द्र हैं। इनका राजनैतिक लाभ उठाने का प्रयास निन्दनीय एवं वर्जनीय है। राजस्थान राज्य मेला प्राधिकरण के उपाध्यक्ष राज्यमंत्री रमेश बोराणा ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि भारतीय जनता पार्टी राजस्थान में आसन्न विधानसभा चुनाव में अपनी निश्चित पराजय को भांपते हुए प्रदेश के प्रमुख धार्मिक मेलों व तीर्थस्थलों का राजनैतिक लाभ उठाने की नीयत से वहां परिवर्तन रैलियों के माध्यम से कुत्सित प्रयास कर रही है।

बोराणा ने कहा कि प्रदेश में सावन भादो मास में भरने वाले धार्मिक मेलों में जन श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है और स्थानीय प्रशासन इस प्रयास में जुटा है कि मेला क्षेत्र में किसी भी प्रकार की असुविधा न होने पाये। भारतीय जनता पार्टी अपने राष्ट्रीय नेताओं का इन मेलामें जमावड़ा कर स्वस्फूर्त होने का स्वांग रच रही है। पूरा देश जानता है कि भाजपा विपक्ष के रूप में राजस्थान में पूरी तरह नाकाम रही है। बारोणा ने भाजपा को धर्म विरोधी बताते हुए कहा कि ये छद्म रूप में हमारी लोक व पारम्परिक धार्मिक आस्था व विश्वास के साथ छलावा कर अपना राजनैतिक लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा नेता यदि सामान्य रूप से तीर्थ दर्शन कर मेलों में सम्मिलित होते तो हम इनका स्वागत करते लेकिन ये लोग राजनीतिक ड्रामेबाजी कर मेलार्थियों की व्यवस्था व सुरक्षा में खलल डाल रहे हैं जो निन्दनीय है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।